सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

धर्मपद

वर्ष - 2025-26, पंद्रहवाँ अंक

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
रेलवे, भुवनेश्वर - 751017 (ओडिशा)

‘धर्मपद’ के 14वें अंक का विमोचन

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

धर्मपद

वर्ष 2025-26 (द्वितीय छमाही)

अंक 15

में

हार्दिक अभिनंदन

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय

रेलवे, उत्तर खंड, रेल सदन

सामंत विहार, चंद्रशेखरपुर

भुवनेश्वर – 751017 (ओडिशा)

मूल्य- राजभाषा के प्रति निष्ठा

धर्मपद पत्रिका परिवार

संरक्षक

श्री अनूप फ्रांसिस डुंगडुंग

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

संपादक

सुश्री कीर्ति श्री

सहायक निदेशक (राजभाषा)

उपसंपादक

श्री सूरज कुमार

कनिष्ठ अनुवादक

विशेष सहयोग

श्री शशि रंजन

सचिव, प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
रेलवे, रेल सदन,चंद्रशेखरपुर भुवनेश्वर-751017
ई मेल : pdarlyecoastr@cag.gov. In
दूरभाष : 0674- 2301045

सत्यमेव जयते

संरक्षक का संदेश

अभिव्यक्ति मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है। मनुष्य की बौद्धिकता, विचारशीलता, सृजनशीलता भाषा के माध्यम से अभिव्यक्ति पाती है और आत्म अभिव्यक्ति के लिए स्वभाषा से बेहतर और कोई माध्यम नहीं हो सकता।

हिंदी की सरलता और सहजता ही इसे राजभाषा के गौरव के अनुरूप बनाती है। हिंदी समूचे भारत की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति में समर्थ है। यही कारण रहा है कि हिंदीतर भाषी क्षेत्रों में भी हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है।

हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में हम निरंतर प्रयासरत हैं और हमारी कार्यालयी पत्रिका भी इसी दिशा में बढ़ाया गया एक कदम है। 'धर्मपद' पत्रिका कार्मिकों के रचनात्मक अभिव्यक्ति एवं सृजनशीलता को एक अवसर प्रदान करती है। 'धर्मपद' का यह 15वाँ अंक भी हिंदी की इस विकास यात्रा में अपना योगदान देते हुए राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में आशानुरूप भूमिका निभाएगा।

सम्पादक मंडल को पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु एवं रचनाकारों को राजभाषा हिंदी के प्रति अतुलनीय निष्ठा हेतु हृदय से धन्यवाद।

श्री अनूप फ्रांसिस डुंगडुंग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

संपादकीय

हमारे कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'धर्मपद' के पंद्रहवें अंक को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। पत्रिका का उद्देश्य कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करना, कार्मिकों की साहित्यिक एवं रचनात्मक प्रतिभा और भावनात्मक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना है।

किसी भी गृह पत्रिका की सफलता उसके पाठकों और रचनाकारों की सक्रिय सहभागिता पर निर्भर करती है। हमें प्रसन्नता है कि इस अंक में कार्मिकों तथा उनके परिवार के सदस्यों ने उत्साहपूर्वक अपनी रचनाएँ भेजकर 'धर्मपद' को स्वरूप प्रदान किया है। यह सहभागिता भविष्य में भी इसी प्रकार बनी रहे, यही हमारी अपेक्षा है।

मैं मार्गदर्शक, संपादकीय सहयोगियों तथा सभी रचनाकारों का हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके सहयोग से यह अंक संभव हो पाया। हिंदी के प्रति हमारा लगाव एवं साहित्य के प्रति रुचि के फलस्वरूप 'धर्मपद' को रोचक एवं तथ्यपरक रूप से आपके सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। भविष्य में इसमें और अधिक निखार लाने हेतु आपके सुझाव एवं मार्गदर्शन अपेक्षित है।

सधन्यवाद,

कीर्ति

कीर्ति श्री

सहायक निदेशक (राजभाषा)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ
1	दादी माँ	श्री विभाष चंद्र	1
2	उम्र का अंतर	श्री सतेन्द्र कुमार राम	3
3	हसरत आसमान छूने की	श्री चंदन कुमार	5
4	यादों की बारात	श्री दीपक कुमार दास	6
5	श्री जगन्नाथ: एक जीवंत जीवन-दर्शन	श्री अभिमन्यु जेना	8
6	ब्रिटिश राज के दौरान ओडिशा में अकाल	श्री बिक्रम मिश्र	11
7	श्रीलंका- एक खूबसूरत देश	श्री महेश्वर साहु	14
8	मायापुर-नवद्वीप की कहानी	श्री मिन्टू हालदार	15
9	हीराकुद बाँध देखने चलें ?	श्रीमती मुस्कान मिश्र	17
10	मुंबई – सपनों का शहर	श्री निरुपम कर्मकार	19
11	अस्वस्थ खाना	श्री सुदीप कुमार बिश्वास	20
12	खामोश सीढियाँ	श्री गणेश्वर साहु	21
13	मैं कौन हूँ?	श्रीमती क्षणप्रभा बेहेरा	24
14	सकारात्मक सोच आपका शक्तिशाली हथियार	श्रीमती नीतू चंद्रा	25
15	मेरी माँ	सुश्री श्रिया शालिनी बेहेरा	27
16	ऑपरेशन सिंदूर	सुश्री स्नेहा राउत	28
17	छुट्टी	श्री सुदीप कुमार बिश्वास	30
18	भारतीय शिक्षा पद्धति का परिवर्तन	श्री विक्रांत आनंद	32
19	ऊँची सड़क : विकास की राह में एक नई समस्या	श्रीमती रोमा कुमारी	34
20	बताशा डाक	श्री सूरज कुमार	37
21	लेखापरीक्षा के क्षेत्र में AI और मशीन लर्निंग	श्री शरत चंद्र महारणा	41
22	कालीजाई मंदिर की कहानी	सुश्री श्रद्धा राउत	43
23	बिना शोर के बदलाव	सुश्री स्वागतिका साहू	44
24	आपके पत्र		47

हिंदी पखवाड़ा 2025

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, भुवनेश्वर
हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह

हिंदी पखवाड़ा- 2025

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, भुवनेश्वर
हिंदी पखवाड़ा
14 से 26 सितंबर 2025
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT

दादी माँ

श्री विभाष चंद्र
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

यह लेख मैं अपनी दादी माँ के बारे में लिख रहा हूँ और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा हूँ। मेरी दादी माँ भारतीय संस्कृति में ढली एक नेकदिल महिला थी। उन्होंने किसी विश्वविद्यालय से शिक्षा ग्रहण नहीं की थी। फिर भी वह सभी जीवों के महत्व को समझती थी और किसी भी जीव (पशु-पक्षी) को हानि पहुंचाने से मना करती थी। वे पेड़ों का महत्व भी समझती थीं और अन्य भारतीय महिलाओं की तरह उनका भी पीपल के पेड़ से विशेष लगाव था। उनके द्वारा कहा गया एक वाक्य जो मेरे मन में गहरे अंकित हो गया, वह था- 'भगवान सब के पूत का भला करें, उसके पीछे मेरे पूत का भला करें'। मतलब भगवान सबके बच्चों का भला करें, उसके पीछे मेरे बच्चे का भी भला करें। मैंने दादी माँ से कहा भी कि सबके पीछे क्यों? आगे क्यों नहीं! दादी माँ ने कहा, "सबकी भलाई होगी तभी तुम्हारी भी भलाई होगी। सबकी भलाई के बिना तुम्हारी भलाई संभव नहीं है।" आज जब मैं अपने चारों तरफ देखता हूँ तो पाता हूँ कि लोग दूसरों की भलाई के बारे में सोचना तो दूर, कैसे किसी भी कीमत पर अपना फायदा हासिल किया जाए इसी में लगे रहते हैं। दूसरों का हित-अहित, अच्छा-बुरा या फिर जीने-मरने से लोगों का कोई वास्ता नहीं और जो जितने पढ़े लिखे हैं, उतने ज्यादा मतलबी और खुद तक सीमित है।

मैं बड़े अफसोस के साथ कह रहा हूँ कि हमारे विश्वविद्यालय ने अच्छे इंसान बनाने या तैयार करने में बहुत मदद नहीं की है। हमारी शिक्षा प्रणाली में कहीं न कहीं कमी है जो एक बेहतर इंसान नहीं बना पा रहे हैं। डॉक्टर तैयार हो रहे हैं लेकिन बहुत सारे डॉक्टरों में नैतिकता की कमी है। इंजीनियर तैयार हो रहे हैं, प्रशासनिक अधिकारी तैयार हो रहे हैं और न जाने विश्वविद्यालय क्या-क्या तैयार कर रहे हैं लेकिन एक नेकदिल इंसान नैतिक रूप से मजबूत इंसान तैयार नहीं कर पा रहे हैं। जबकि मेरी दादी माँ बिना किसी विश्वविद्यालय गए हुए भी नैतिक रूप से बहुत मजबूत इंसान थी और समाज एवं अन्य जीवों के प्रति संवेदनशील थी।

हमारी भारतीय संस्कृति एक प्राचीन संस्कृति है और बुनियादी तौर पर एक मजबूत संस्कृति है। मेरी दादी माँ, जैसा मैंने आपको बताया भारतीय संस्कृति में पली-बढ़ी महिला थी और उनका भारतीय संस्कृति की मूल अवधारणाओं में गहरा विश्वास था। अतः वे नैसर्गिक रूप से वह सब-कुछ सीख गईं या जानती थीं जिसके लिए आज सेमीनार या वेबीनार करने की जरूरत पड़ रही है। यह सेमिनार और वेबीनार भी खाना पूर्ति बनकर रह गए हैं। इसका प्रमाण यह है कि हजारों प्रजाति इस धरती से विलुप्त हो चुके हैं और हजारों विलुप्त होने के कगार पर हैं। लाखों हेक्टेयर जंगल नष्ट किए जा चुके हैं। प्रदूषण का प्रभाव बढ़ता जा रहा है और ग्लोबल वार्मिंग का असर अब दुनिया में हर जगह देखने को मिल रहा है।

भारतीय संस्कृति सह-अस्तित्व में भरोसा करती है। इसका तात्पर्य यह है कि सबका अस्तित्व साथ-साथ चले और सबका अस्तित्व एक-दूसरे पर निर्भर है। इस धरती पर सबका हक है, यह धरती सबों की है। अतः यहाँ मानव, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, नदियाँ, तलाब, जंगल, समुद्र, पहाड़, सभी खुशहाल होने चाहिए और सबका अस्तित्व बरकरार रहना चाहिए। हमें अपने और दूसरों के अस्तित्व को मजबूत बनाने में योगदान देना चाहिए। हमारा उद्देश्य 'जियो और जीने दो' होना चाहिए। यह हमारे अपने लिए भी हितकर है। 'वसुधैव कुटुंबकम्' इसी आशय को प्रकट करता है।

दादी माँ की एक महत्वपूर्ण सीख यह थी कि- "किसी के बारे में बुरा ना सोचो"। वह हमेशा कहती थी- 'अपने दुश्मन के बारे में भी बुरा नहीं सोचना चाहिए।' अच्छा सोचना और सुखद सोचना ही अच्छी सेहत का आधार है, यह तो हम सब जानते हैं और यह सीख मुझे बचपन में ही दादी माँ से मिल गयी थी। अभी भी मैंने यह सीख याद रखी है और इसपर चलने की कोशिश करता हूँ।

दादी माँ की उम्र जब 84-85 साल थी और वह अपनी जीवन की संध्या बेला में थी, उस समय वह अपने जीवन से संतुष्ट थी और संसार छोड़ने के लिए मानसिक रूप से तैयार थी। उन्हें किसी चीज का लोभ, डर या लालसा नहीं थी। न मरने का डर, न ही और जीने की चाह। वह कहा करती थी कि भगवान अब मुझे अपनी शरण में ले लो। मरने वक्त जीवन से संतुष्ट होना, मानसिक शांति होना और इच्छा रहित होना यही तो मोक्ष है। मोक्ष का मतलब जहाँ तक मुझे मालूम है- जब कोई इच्छा बची न रह जाए, जब मन शांत हो और संतुष्ट हो।

दादी माँ अब इस दुनिया में नहीं है लेकिन उनकी सीख, उदार विचार और नेक नीयत अब भी मेरे जेहन में है या यूँ कहूँ मेरे जीवन और विचारों में है।

उम्र का अंतर

श्री सतेन्द्र कुमार राम
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

कुछ वर्ष पहले रेडियो पर जनसंख्या नियंत्रण से जुड़ा एक विज्ञापन अक्सर सुनाई देता था, जिसमें एक व्यक्ति पंडित जी से कहता था—"पंडित जी! जल्दी-जल्दी हमारा विवाह संपन्न करें और मंत्र पढ़ें।" इस पर पंडित जी हँसकर कहते थे—"जजमान! सुखी वैवाहिक जीवन का यही मंत्र है....." और फिर वे समझाते थे—

पहला बच्चा ढाई साल बाद....., दूसरा भी इतने ही अंतर से हो पैदा,
चाहे बेटे हों या बेटियाँ.....,बच्चे न हों दो से ज्यादा,
यही है सुखी वैवाहिक जीवन का मंत्र... ।

उस समय यह बात केवल एक सरकारी प्रचार की तरह लगती थी, लेकिन आज जब मैं स्वयं दो बच्चों का पिता हूँ, तब इस संदेश का महत्व ज्यादा समझ में आता है। मेरे दो बच्चे हैं—एक बेटा और एक बेटी। दोनों की उम्र में लगभग छह वर्ष का अंतर है। जनसंख्या नियंत्रण की दृष्टि से यह अंतर शायद ठीक माना जाए लेकिन पारिवारिक अनुभवों के आधार पर मुझे लगता है कि यह अंतर थोड़ा अधिक हो गया है। इस संदर्भ में अपने कुछ अनुभव साझा करना चाहूँगा जो कि निम्न है:-

1. बच्चों के खेल में अंतर:- बचपन में हर बच्चा खेलना चाहता है लेकिन जब दो बच्चों की उम्र में काफी अंतर हो, तो उनके खेल और रुचियाँ भी अलग-अलग हो जाती हैं। छोटा बच्चा घर के अंदर खिलौनों और साधारण खेलों में आनंद लेता है, जबकि बड़ा बच्चा उस उम्र में बाहर के आउटडोर गेम्स खेलना चाहता है। ऐसे में दोनों साथ खेल नहीं पाते।

2. लड़के और लड़की के खेल में अंतर:- अगर एक बच्चा लड़का और दूसरा लड़की हो, तो स्वाभाविक रूप से उनके खेलों में भी अंतर होता है। लड़की को गुड्डा-गुड़िया खेलना पसंद होता है, तो लड़के को क्रिकेट या मोबाइल गेम्स।

3. खिलौनों में अंतर:- उम्र के अंतर के कारण दोनों बच्चों के खिलौने भी अलग-अलग होते हैं। छोटा बच्चा कार, गुड़िया, रंगीन ब्लॉक्स में रुचि रखता है, जबकि बड़े बच्चे का रुझान साइकिल, बैट-बॉल, या तकनीकी चीजों की ओर रहता है।

4. अच्छे दोस्त न बन पाना:- कम उम्र के अंतर वाले भाई-बहन अक्सर अच्छे दोस्त बन जाते हैं। वे एक ही तरह की बातें करते हैं, एक ही तरह की गतिविधियों में शामिल होते हैं लेकिन उम्र में ज्यादा अंतर

होने पर उनके बीच दोस्ती का वह रिश्ता आसानी से विकसित नहीं हो पाता।

5. मन की बात साझा न कर पाना:- हमउम्र के बच्चे अपने मन की बातें एक-दूसरे से साझा करते हैं। स्कूल, दोस्त, छोटी-छोटी खुशियाँ या परेशानियाँ—सब कुछ वे आपस में बाँट लेते हैं लेकिन ज्यादा अंतर होने पर उनकी सोच और अनुभव अलग-अलग हो जाते हैं, जिससे विचारों का आदान-प्रदान कम हो जाता है।

6. पढ़ाई में अंतर:- उम्र में ज्यादा अंतर होने से दोनों एक साथ या एक ही स्कूल में नहीं पढ़ पाते हैं। बड़ा बच्चा जब हायर क्लास में पहुँच जाता है, तब छोटा अभी प्राइमरी क्लास में होता है। इसलिए पढ़ाई के विषय, तरीके और समय अलग-अलग हो जाते हैं।

7. बड़े बच्चे का अकेलापन:- जब छोटा बच्चा बहुत छोटा होता है, तब वह बड़े बच्चे का साथी नहीं बन पाता। ऐसे में बड़ा बच्चा अक्सर अकेले खेलता या समय बिताता है। एकल परिवार का चलन बढ़ने के कारण बड़े बच्चे को दादा-दादी, चाचा-चाची के बीच समय बिताने का भी मौका नहीं मिल पाता है, इस कारण भी कई बार बड़े बच्चे को अकेलापन महसूस होता है।

8. ईर्ष्या की भावना:- घर में नए जन्मे छोटे बच्चे को ज्यादा देखभाल की जरूरत होती है। इस कारण बड़े बच्चे के मन में थोड़ी ईर्ष्या या असंतोष की भावना भी आ जाती है।

9. प्यार का बँट जाना:- जब घर में दूसरा बच्चा आता है, तो बड़े बच्चे को लगता है कि माता-पिता का प्यार अब बँट गया है। मम्मी-पापा अब छोटे बच्चे को ज्यादा मानते या प्यार करते हैं।

10. बच्चों की शिकायतें:- उम्र का अंतर होने के कारण कई बार छोटे-छोटे विवाद भी होते हैं। बड़े बच्चे को लगता है कि छोटा उसकी चीजें खराब कर देता है, और छोटा बच्चा शिकायत करता है कि बड़ा उसे अपने साथ नहीं खेलाता है।

हालाँकि बच्चों की उम्र में अधिक अंतर के केवल नुकसान ही नहीं होते, कुछ फायदे भी होते हैं।

1. छोटे बच्चे की अच्छी देखभाल:- घर में अगर बड़ा बच्चा खासकर बड़ी बहन हो, तो माँ के लिए छोटे बच्चे की देखभाल आसान हो जाती है।

2. स्कूल में मदद:- जब छोटा बच्चा उसी स्कूल में पढ़ता है जहाँ बड़ा पढ़ चुका होता है या पढ़ रहा होता है तो उसे काफी मदद मिलती है। बड़े भाई या बहन के कारण स्कूल में उसका आत्मविश्वास भी बढ़ता है और दूसरे बच्चे भी उसे आसानी से परेशान नहीं करते।

3. घर के बाहर सहारा:- घर के बाहर कहीं जाना हो—जैसे ट्यूशन, बाजार या किसी दोस्त के घर—तो बड़ा भाई या बहन उसके साथ अभिभावक की तरह जा सकता है जिससे माता-पिता बच्चों की सुरक्षा को लेकर निश्चिंत रहते हैं।

अंत में मेरे अनुभवों के आधार पर मैं यही कहना चाहूँगा कि दो बच्चों के बीच ज्यादा से ज्यादा तीन वर्ष का अंतर होना चाहिए। माता-पिता को बच्चों को समझाना चाहिए कि सभी बच्चे माँ-बाप के लिए समान हैं, सभी को मिल-जुल कर प्रेम के साथ रहना चाहिए तभी वे एक-दूसरे के अच्छे साथी और सहारा बन सकते हैं।

हसरत आसमान छूने की

श्री चंदन कुमार
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

आज मैं अपने बारे में नहीं, अपने एक दोस्त की कहानी बताने जा रहा हूँ- 2007 की बात है, जब मैं पटना में बी.टेक करने आया। उसी समय मेरा एक साथी बना – पंकज। हम दोनों अलग-अलग जगहों से आए थे इसलिए शुरुआत में ज्यादा बातचीत नहीं होती थी लेकिन दोनों का स्वभाव शांत था, पार्टी या भीड़-भाड़ से दूर रहने वाले। यही समानता धीरे-धीरे हमें करीब ले आई और हम अच्छे दोस्त बन गए।

पंकज बहुत ही शांत और गंभीर स्वभाव का था। कॉलेज की पार्टियों में वह कभी नहीं जाता था। मैं भी ऐसा ही था, इसलिए हम दोनों अक्सर साथ बैठकर बातें करते थे। धीरे-धीरे उसने अपने जीवन की कहानी मेरे साथ साझा करनी शुरू की।

उसने बताया कि उसका बचपन बहुत कठिनाइयों में बीता। उसके माता-पिता मजदूरी करते थे। घर कच्चा था, झोपड़ी जैसा। पढ़ाई की सुविधा गांव में नहीं थी लेकिन उसके मन में एक सपना था – अपने माता-पिता और बहन के लिए पक्का घर बनाना। यही सपना उसकी मेहनत की सबसे बड़ी वजह बना।

पंकज ने किसी तरह संघर्ष करते हुए बारहवीं तक पढ़ाई पूरी की। आगे पढ़ना चाहता था लेकिन पैसों की कमी थी। बैंक से लोन नहीं मिला तो उसके पिता ने गांव वालों से पैसे उधार लिए । इन्हीं पैसों से वह पटना आया और AIEEE की परीक्षा की तैयारी की और अच्छे रैंक लाकर बीटेक में दाखिला ले लिया।

बी.टेक के दौरान उसके पास पैसे कम थे इसलिए वह कोचिंग पढ़ाकर अपनी पढ़ाई और घर का खर्च चलाता था। चार साल की पढ़ाई के दौरान उसने न केवल अपनी पढ़ाई पूरी की बल्कि घर का लिया हुआ कर्ज भी चुका दिया और घर की थोड़ी-बहुत मरम्मत भी करवाई।

2011 में जब हम दोनों पास आउट हुए, मेरा चयन इंफोसिस में हुआ और उसका एक्सेंचर में लेकिन पंकज का सपना सिर्फ नौकरी करना नहीं था। वह दिल्ली गया और वहाँ कोचिंग लेकर सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी शुरू की। उसने कड़ी मेहनत की और अंततः आईएएस परीक्षा पास कर ली।

आज पंकज अपने सपनों को पूरा कर चुका है। उसने अपने माता-पिता के लिए पक्का घर बनवाया, खुद की गाड़ी ली और एक सम्मानजनक जीवन जी रहा है। जब भी फोन पर बात होती है, वह बताता है कि उसकी जिंदगी अब बहुत अच्छी चल रही है।

पंकज की कहानी हमें यही सिखाती है कि अगर हम कठिन समय में हार मान लें तो सपने कभी पूरे नहीं होते लेकिन अगर हम लगातार मेहनत करते रहें, तो चाहे हालात कितने भी मुश्किल क्यों न हों, सफलता जरूर मिलती है।

यादों की बारात

श्री दीपक कुमार दास
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

क्रिसमस में बच्चों की स्कूल की छुट्टी थी तो वैसे ही एक दिन ऑफिस में दोस्तों के साथ चर्चा हुई कि क्यों न इस अवसर का फायदा उठाया जाए और कहीं घूमकर आया जाए। बस क्या था सभी लग गए अपनी-अपनी राय देने। वैसे तो उड़ीसा में बहुत सारी जगहें हैं घूमने जाने को, जैसे- कोणार्क सूर्य मंदिर, गोपालपुर बीच, हीराकुद बांध, भितरकनिका राष्ट्रीय उद्यान, सत्कोसिया टाइगर रिजर्व, डेरिंगबारी, टिकरापारा वन्यजीव अभ्यारण, चांदीपुर, सिमलीपाल राष्ट्रीय पार्क, मंगलजोड़ी इत्यादि लेकिन हमारे दोस्तों के कुछ बच्चों की दसवीं की बोर्ड परीक्षा सामने थी, इसीलिए मन बनाया गया कि ज्यादा दिन नहीं, दो-तीन दिन बच्चों के साथ एक छोटा सा भ्रमण किया जाए। यह निर्णय लिया गया कि क्यों न साल के अंत में एक बार भगवान जगन्नाथ के दर्शन किए जाएँ। पूरा साल अच्छे से बिताने के लिए भगवान का धन्यवाद किया जाए और आने वाले साल में हमारा जीवन सफलतापूर्वक व्यतीत हो, यह कामना की जाए। फिर क्या था, सभी तैयार हो गए।

योजना के अनुसार शुक्रवार को कार्यालय समय की समाप्ति के पश्चात हम दस परिवार अपने परिवार के साथ अपने-अपने वाहन लेकर चल पड़े तथा 9-10 बजे रात तक सभी रेलवे अधिकारी विश्राम गृह, पुरी पहुंच गए। सभी परिवार जब एक साथ जमा हुए तो लगता था जैसे किसी जुलूस में आए हों। बच्चे-बूढ़े मिलाकर लगभग कुल 40 लोग थे। परिवार के सभी सदस्य बहुत आनंदित थे। मौज मस्ती से खाया-पिया गया, फिर निर्णय हुआ कि सुबह 5:00 बजे भगवान जगन्नाथ के दर्शन करने हैं। इसलिए जो जाना चाहते हैं कृपया साढ़े तीन से चार बजे के बीच उठकर नहा-धोकर तैयार हो जाएँ। जैसा सोचा था वैसा ही हुआ, सभी 4:00 बजे नहा-धोकर तैयार हो गए और 5:00 बजे हमलोग भगवान के दर्शन करने निकल पड़े। चूँकि सुबह-सुबह भीड़ बहुत कम थी तो जल्दी में भगवान के दर्शन हो गए। हमलोगों को भगवान की उस रूप के दर्शन हुए जिसके बारे में हम लोग नहीं जानते थे। जैसे कोई सुबह सोकर उठता है और नहाने के लिए तैयार होता है, भगवान के उसी रूप में दर्शन हुए। हमलोग जब गर्भ-गृह के पास गए तो सेवादार भगवान को नहलाने के लिए कपड़ा पहना रहे थे। कुछ सेवादार बड़े-बड़े पीतल की कलसी में पानी भरकर ला रहे थे। अद्भुत दृश्य था। मन मंत्रमुग्ध हो गया। फिर बाकी मुख्य मंदिरों जैसे विमला मां का मंदिर, लक्ष्मी मां का मंदिर इत्यादि के दर्शन कर सभी बाहर निकले और पुनः सभी रेस्ट हाउस आ गए। जब कभी सभी लोग खाने के लिए एकत्रित होते तो लगता था जैसे प्रीति भोज का आनंद ले रहे हैं।

फिर नाश्ता कर सभी लोग समुद्र में नहाने के लिए ब्लू-फ्लैग बीच पर गए। वहाँ बहुत सारी फोटोग्राफी हुई। सभी के हाथ में मोबाइल फोन, लगता था सभी एक से एक बढ़कर फोटोग्राफर हैं। सभी ने मिलकर क्या-क्या नहीं किया, रील बने, उसे फेसबुक-इंस्टाग्राम पर अपलोड किया गया और समुन्द्र में नहाने का जोरदार लुफ्त लिया गया। सचमुच बहुत आनंद आया। शाम को वहीं पुरी के बगल में बालुखंड नेचर कैंप में जाया गया। वहां प्रकृति की अद्भुत छठा का अनुभव हुआ। फिर उस रात को आराम कर सुबह 7:00 बजे चिलिका के लिए रवाना हुआ। रास्ते में भगवान जगन्नाथ का एक मंदिर था, जिसका नाम अलारनाथ मंदिर है। कहा जाता है कि भगवान जगन्नाथ को जब बुखार होता है, तो उसके उपचार के लिए कुछ दिनों तक उसी मंदिर में लाकर रखा जाता है।

फिर वहां से निकले तो रास्ते में एक अजीब घटना हुई। गंतव्य स्थान से लगभग 6-7 किलोमीटर पहले कुछ लोगों ने मोटरसाइकिल, स्कूटर लेकर हमलोगों का पीछा किया और हमें रुकने पर विवश किया। वहाँ से एक दूसरी जगह पर लेकर जाने का असफल प्रयास किया, यह कहकर कि, चिलिका लेक, जहां से डॉल्फिन और साइबेरियन पक्षी देखे जा सकते हैं, वह इधर है। हमलोगों ने उनलोगों की बात नहीं मानी, अगर मान लेते तो हमलोग ठगे जाते। दरअसल वे लोग इसी बहाने से बहुत अधिक पैसे वसूलकर चिलिका लेक का भ्रमण कराते हैं। मैं यह बात इसलिए लिख रहा हूं कि सतपारा जाने वाले सावधान रहें और पुरी से निकलकर वहां तक जाएं जहां जाकर रोड खत्म हो जाता है। वही असली सतपारा है जहां से उचित कीमत पर चिलिका लेक का भ्रमण किया जाता है।

वहां पहुंचकर हम सबने तीन बड़े-बड़े नावों पर सवार होकर चिलिका लेक में नौका विहार का आनंद उठाया। नौका विहार करते समय पक्षियों के लिए कुछ खाने का सामान भी लेकर गए थे। जब खाना पानी में फेंकने लगे तो हजारों की संख्या में पक्षी नाव के पीछे-पीछे उड़ने लगे। सचमुच अद्भुत दृश्य था, प्रकृति का वह रूप मानव बार-बार देखने को ललायित होंगे। फिर कुछ दूर और आगे गया तो चिलिका के मुख्य आकर्षण डॉल्फिन को पानी में उठते-डूबते देखा। सभी लोग डॉल्फिन अपनी आँखों से देखकर प्रफुल्लित हो उठे। बच्चों की तो खुशी का ठिकाना ही नहीं रहा।

फिर हमलोग ऐसी जगह पहुंचे जहां पर बंगाल की खाड़ी से चिलिका लेक का संगम होता है। वह जगह भी अद्भुत थी। चारों तरफ झाऊ के पेड़, सामने कोलाहल करता हुआ बंगाल की खाड़ी और ऊपर नीला आसमान। सचमुच प्रकृति की अद्भुत छटा। वहां भी सभी ने फोटोग्राफी की, रील बनाए, भरपूर मौज-मस्ती की। बच्चे सीपियों को चुनने, चलते हुए केकड़ों के पीछे भागने और उसे पकड़ने का असफल प्रयास करने में लगे रहे।

फिर कुछ देर वहां बिताकर सभी लोग वापस आ गए और फिर किनारे में आकर एक होटल में सभी ने दोपहर का भोजन किया। होटल में जब एक बार 35-40 लोग पहुंचे तो वहां का दृश्य भी अजीब था। सभी की भूख शांत करने में होटल वाले पूरे तन-मन से लग गये। वे लोग भी परेशान हो रहे थे कि पहले किसे शांत करें। उन लोगों का भी यह पहला अनुभव रहा होगा कि इतने लोग भी कभी होटल में एक बार में आ सकता हैं। सचमुच एक "बारात" जैसे। बड़ा मजा आया। फिर भोजन कर कुछ लोग वापस भुवनेश्वर आ गए और कुछ लोग पुनः पुरी चले गए। सचमुच यह एक अविस्मरणीय यात्रा थी, जो सदा के लिए हमारी यादों में कैद हो गयी, जिसकी अनुभूति भविष्य में कभी भी गुदगुदा सकती है।

श्री जगन्नाथ: एक जीवंत जीवन-दर्शन

श्री अभिमन्यु जेना
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री जगन्नाथ अनंत चेतना का आधार हैं, असीम भावनाओं का भंडार हैं। वे संपूर्ण चराचर जगत के स्वामी हैं। सृष्टि के हर कोने में उनका विस्तार है। ओडिशा के पुरी धाम में विराजमान भगवान श्री जगन्नाथ को "जगत का नाथ" कहा गया है—अर्थात् वे संपूर्ण सृष्टि के स्वामी हैं। सृष्टि के हर नियम और गति को नियंत्रित करते हैं।

श्री जगन्नाथ : नाम और अर्थ

जगन्नाथ' शब्द दो भागों से बना है—जगत (संपूर्ण संसार) और नाथ (स्वामी)। इसका अर्थ है—जो पूरे संसार के स्वामी हैं। यही कारण है कि श्री जगन्नाथ को केवल हिंदुओं के देवता नहीं, बल्कि सार्वभौमिक ईश्वर के रूप में देखा जाता है।

ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

श्री जगन्नाथ संस्कृति का विकास वैदिक परंपरा, आदिवासी विश्वासों और भक्ति आंदोलन के संगम से हुआ है। नीलांचल क्षेत्र में प्राचीन काल से आदिवासी समुदायों द्वारा दारु देवता की पूजा की जाती थी। बाद में वैष्णव परंपरा के प्रभाव से यह संस्कृति विकसित होकर श्री जगन्नाथ स्वरूप में प्रतिष्ठित हुई।

दारु ब्रह्म की अवधारणा

श्री जगन्नाथ को दारु ब्रह्म कहा जाता है—अर्थात लकड़ी में प्रतिष्ठित ब्रह्म। यह अवधारणा अत्यंत गूढ़ है। जहाँ अधिकांश मंदिरों में पत्थर या धातु की मूर्तियाँ होती हैं, वहीं श्री जगन्नाथ लकड़ी के हैं। इसका तात्पर्य यह है कि ईश्वर प्रकृति के सबसे सरल और जीवंत रूप में भी विद्यमान हैं। लकड़ी का नश्वर होना हमें जीवन की क्षणभंगुरता का बोध कराता है।

अद्वितीय स्वरूप और दार्शनिक संदेश

भगवान श्री जगन्नाथ, भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा का स्वरूप सामान्य मूर्तिकला से भिन्न है। उनके अधूरे हाथ-पैर, गोल नेत्र और सरल आकृति यह संकेत देते हैं कि ईश्वर किसी भी भौतिक पूर्णता में सीमित नहीं हैं। उनकी विशाल आँखें करुणा, सजगता और समदृष्टि का प्रतीक हैं। वे हर जीव को बिना भेदभाव देखते हैं।

श्री जगन्नाथ मंदिर का नीलचक्र

पुरी स्थित श्री जगन्नाथ मंदिर के शिखर पर विराजमान नीलचक्र जगन्नाथ संस्कृति की दिव्य चेतना, रक्षा और सनातन विश्वास का प्रतीक माना जाता है। यह चक्र मंदिर के शीर्ष पर, आकाश की ओर उन्मुख होकर स्थापित है और दूर-दूर से दिखाई देता है। इसे "नील" इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह आकाश की तरह नीले रंग का प्रतीत होता है।

श्रीजगन्नाथ मंदिर के नीलचक्र के ऊपर लगा पतितपावन बाना अक्सर हवा की उलटी दिशा में उड़ता हुआ दिखाई देता है। प्रतिदिन सेवायत (चुनरा सेवक) लगभग 200 फीट ऊँचे शिखर पर बिना किसी सुरक्षा साधन के चढ़कर पतितपावन बाना बदलते हैं। यह परंपरा सदियों से निरंतर और निर्भय भक्ति का प्रतीक है।

महाप्रसाद

पुरी श्रीमंदिर का महाप्रसाद श्री जगन्नाथ संस्कृति की आत्मा है। यहाँ जाति, वर्ग, ऊँच-नीच का कोई भेद नहीं किया जाता। सभी भक्त एक साथ बैठकर प्रसाद ग्रहण करते हैं। यह परंपरा सामाजिक समानता, भाईचारे और मानवीय गरिमा का संदेश देती है।

श्री जगन्नाथ मंदिर की रसोई

पुरी स्थित श्री जगन्नाथ मंदिर की रोसशाला (रसोई) संसार की सबसे बड़ी पवित्र रसोई मानी जाती है। रोसशाला में बना भोजन पहले भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा को अर्पित किया जाता है, उसके बाद वही भोजन महाप्रसाद को रूप में भक्तों को दिया जाता है। यह परंपरा सिखाती है कि भोजन केवल पेट भरने का साधन नहीं, बल्कि ईश्वर से जुड़ने का माध्यम भी है।

रथयात्रा : ईश्वर का जनसामान्य से मिलन

रथयात्रा श्री जगन्नाथ संस्कृति का सबसे प्रसिद्ध और भव्य उत्सव है। वर्ष में एक बार भगवान श्री जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा विशाल रथों पर सवार होकर श्रीमंदिर से बाहर निकलते हैं और गुंडिचा मंदिर तक जाते हैं। इसका गूढ़ अर्थ यह है कि ईश्वर स्वयं भक्तों के पास आते हैं। रथ खींचने में राजा, सेवक, साधु और सामान्य जन सभी समान होते हैं।

नवकलेवर

नवकलेवर श्री जगन्नाथ संस्कृति का सबसे रहस्यमय पर्व है। इसमें भगवान की पुरानी दारु मूर्तियों को नए काष्ठ से बनी मूर्तियों से बदला जाता है। यह परंपरा यह दर्शाती है कि शरीर नश्वर है पर आत्मा अमर। यह पर्व मानव को यह सत्य सिखाता है कि परिवर्तन ही जीवन का नियम है।

श्री जगन्नाथ मंदिर की 22 पहाच (बाइस सीढ़ियाँ)

श्री जगन्नाथ मंदिर, पुरी में सिंहद्वार से अंदर प्रवेश करने पर जो 22 सीढ़ियाँ आती हैं, उन्हें "बाइस पहाच" कहा जाता है। मान्यता है कि महाप्रसाद ग्रहण करने से पहले इन 22 सीढ़ियों को पार करना जीवन के पापों और अहंकार का त्याग दर्शाता है।

श्रीजगन्नाथ मंदिर के चारों द्वार

श्रीजगन्नाथ मंदिर के चार प्रमुख द्वार हैं, जो चार दिशाओं में स्थित हैं। ये द्वार केवल प्रवेश-निकास के मार्ग नहीं, बल्कि आध्यात्मिक अर्थ और प्रतीक भी रखते हैं।

सिंहद्वार, जो कि मंदिर का मुख्य और पूर्व दिशा में स्थित प्रवेश द्वार है, दोनों ओर स्थापित विशाल सिंह प्रतिमाओं से युक्त है। अधिकांश भक्त इसी द्वार से मंदिर में प्रवेश करते हैं। सिंह शक्ति, साहस और धर्म का प्रतीक होता है।

अश्वद्वार, जो दक्षिण दिशा में स्थित है और घोड़े की प्रतिमा से पहचाना जाता है, संयम और अनुशासन का प्रतीक माना जाता है। दक्षिण दिशा का संबंध यम से होने के कारण यह द्वार मृत्यु-भय से मुक्ति का संकेत देता है।

व्याघ्रद्वार, पश्चिम दिशा में स्थित है और बाघ की प्रतिमा से युक्त है। पश्चिम दिशा सूर्यास्त और अंधकार की प्रतीक मानी जाती है। इस द्वार से प्रवेश करने का तात्पर्य है अज्ञान, भय और अंधकार को पीछे छोड़कर ज्ञान और प्रकाश की ओर अग्रसर होना।

हस्तिद्वार, जो उत्तर दिशा में स्थित है और हाथी की प्रतिमा से पहचाना जाता है। यह द्वार यह संदेश देता है कि सच्ची समृद्धि केवल भौतिक धन से नहीं, बल्कि धर्म, संयम और सत्कर्मों से प्राप्त होती है।

श्रीजगन्नाथ मंदिर की मेघनाद पाचरी

मेघनाद पाचरी श्रीजगन्नाथ मंदिर, पुरी की सबसे बाहरी और विशाल प्राचीर (चारदीवारी) है। इसके भीतर प्रवेश करने पर भक्त स्वयं को धर्म-क्षेत्र में अनुभव करता है। लोकमान्यता है कि यह प्राचीर इतनी विशाल है कि यहाँ खड़े होकर समुद्र की गर्जना (नाद) भी सुनाई देती है, इसी से इसका नाम मेघनाद पाचरी पड़ा।

भक्ति आंदोलन और श्री जगन्नाथ

चैतन्य महाप्रभु, सालबेग, दासिया बावरी जैसे संतों ने श्री जगन्नाथ भक्ति को जन-जन तक पहुँचाया। मुस्लिम भक्त सालबेग की भक्ति इस बात का प्रमाण है कि श्री जगन्नाथ संस्कृति धर्म की सीमाओं से परे है।

वैश्विक प्रभाव

आज श्री जगन्नाथ संस्कृति भारत से बाहर भी फैल चुकी है। अमेरिका, इंग्लैंड, रूस सहित अनेक देशों में रथयात्रा आयोजित होती है। यह संस्कृति विश्व को प्रेम, सहिष्णुता और एकता का संदेश देती है।

अतः श्री जगन्नाथ संस्कृति केवल एक धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि एक जीवंत जीवन-दर्शन है। यह हमें सिखाती है कि ईश्वर मंदिर में ही नहीं, बल्कि प्रेम, सेवा और समरसता में निवास करते हैं। श्री जगन्नाथ केवल देवता नहीं—वे चेतना हैं, संस्कृति हैं और मानवता का प्रकाश हैं।

ब्रिटिश राज के दौरान ओडिशा में अकाल

श्री बिक्रम मिश्र
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

ब्रिटिश राज के दौरान ओडिशा में दो बार भयंकर अकाल पड़ा, एक 1866 में 'न-अंक दुर्भिक्ष' और दूसरा 1899 में 'छपन साल' अकाल । यह दोनों अकाल आज भी ओडिशा की सामूहिक स्मृति में ब्रिटिश कुशासन के काले अध्याय के रूप में अंकित है।

'न-अंक दुर्भिक्ष'

1866 का ओडिशा अकाल, जिसे स्थानीय रूप से 'न-अंक दुर्भिक्ष' (Na-Anka Famine) के नाम से जाना जाता है, ओडिशा के इतिहास की सबसे विनाशकारी आपदाओं में से एक था। यह अकाल पुरी के राजा गजपति दिव्यसिंह देव के शासन के नौवें (9वें) वर्ष में आया था। गरीबी और भूख के कारण कई लोग अपने घर छोड़कर चले गए और समाज का निचला वर्ग सबसे अधिक प्रभावित हुआ । 'न-अंक' अकाल ने पुरी और कटक जिलों में लगभग दस लाख लोगों की जान ले ली थी। यह उस समय की आबादी का लगभग एक तिहाई था।

इस अकाल के जनहानि, महामारी और सामाजिक संकट के भीषण प्रभाव के बाद सर जॉर्ज कैंपबेल की अध्यक्षता में एक समिति कैंपबेल आयोग (Campbell Commission) का गठन किया गया, जिसने त्रासदी के लिए सरकारी मशीनरी को दोषी ठहराया। अकाल के प्रमुख कारण - मानसून की विफलता, प्रशासनिक विफलता, परिवहन का अभाव और ब्रिटिश आर्थिक नीतियों को माना गया । पुरी गजेटियर में यह स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि ओडिशा के कमिश्नर टी. ई. रेवेनशॉ (T.E. Ravenshaw) ने ठीक से प्रबंधन नहीं किया। उनके खराब प्रबंधन के कारण इतने सारे लोग अकाल से मर गए। 1865 के सूखे और 1866 की बाढ़ ने अकाल को और भी गंभीर बना दिया।

अकाल के दौरान, उस समय के कलेक्टर ने ऊपर के अधिकारी को चावल आयात करने के लिए लिखा था लेकिन सरकार ने पुरी में चावल आयात करने से मना कर दिया। बेशक, उस समय चावल आयात करना इतना आसान नहीं था। परिवहन में आज जितनी सुविधा नहीं थी। चावल से लदा एक जहाज़ समुद्र के रास्ते पुरी के पास पहुँचा, लेकिन प्रशासन ने जहाज़ वापस कर दिया। सरकार ने आदेश दिया कि लोगों को राहत स्कीम में काम के लिए पैसे दिए जाएँ। मज़दूरों को देने के लिए चावल की कमी

के कारण राहत स्कीम में रुकावट आई। लोग हाथ में पैसे होने के बावजूद चावल नहीं खरीद सके। यह समस्या जून 1866 तक जारी रही। जून में चावल सात सेर प्रति रुपये में उपलब्ध था। 13 जून को पुरी में बाहर से चावल आया। कलेक्टर ने इसे आठ सेर प्रति रुपये में बेचना शुरू कर दिया। नवंबर तक अधिक चावल आयात किया गया। चावल की कीमतें गिर गईं और यह बाजार में 21 सेर प्रति रुपये में उपलब्ध था। धीरे-धीरे राहत केंद्र बंद हो गए और स्थिति सामान्य हो गई। प्रशासन ने सही समय पर चावल का आयात किया होता और पुरी कलेक्टर के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया होता, तो शायद इतने लोग नहीं मरते। प्रशासनिक स्तर पर कहा जाता है कि अक्टूबर 1866 तक 210,866 लोगों की मौत हो चुकी थी। ध्यान देने वाली बात यह है कि 1866 की बाढ़ से चार लाख लोग प्रभावित हुए थे।

1866 की त्रासदी के बाद भविष्य की आपदाओं से बचने के लिए अकाल संहिता (Famine Code): 1866 विकसित की गई । बुनियादी ढांचे के विकास के लिए 'कोस्ट कैनाल' (Coast Canal) जैसी नहरों का निर्माण किया गया और सिंचाई प्रणालियों में सुधार किया गया। तत्कालीन कमिश्नर टी.ई. रेवेंशॉ (T.E. Ravenshaw) ने इस आपदा के बाद शिक्षा के महत्व को समझते हुए कई स्कूल और कॉलेज स्थापित किए, जिनमें से प्रमुख रेवेंशॉ कॉलेज (अब विश्वविद्यालय) है। अकाल के बाद राष्ट्रवाद का उदय हुआ। इस अकाल ने शिक्षित भारतीयों को ब्रिटिश शासन के शोषणकारी चरित्र के प्रति जागरूक किया। दादाभाई नौरोजी ने अपनी 'ड्रेन थ्योरी' (Drain Theory) में इसका उल्लेख किया।

'छपन साल' अकाल

1899-1900 का अकाल, जिसे भारतीय इतिहास में 'छप्पनिया अकाल' (विक्रम संवत 1956) के रूप में जाना जाता है, मुख्य रूप से पश्चिमी और मध्य भारत (राजस्थान, गुजरात, बॉम्बे प्रेसीडेंसी) में केंद्रित था। हालाँकि, ओडिशा के संदर्भ में इस काल के दौरान स्थिति 1866 के कुख्यात 'न-अंक' अकाल जैसी प्रलयंकारी नहीं थी, फिर भी अकाल ने डेढ़ लाख लोगों की जान ले ली थी।

इस अकाल का कारण था अल्प वर्षा व अनाज की कीमतों में वृद्धि । 19वीं शताब्दी के अंत तक यहाँ की कृषि अर्थव्यवस्था पहले से ही ब्रिटिश कराधान और ऋणग्रस्तता के कारण कमजोर थी। 1899 के सूखे ने किसानों और खेतिहर मजदूरों की स्थिति को और दयनीय बना दिया। मानसून की भारी विफलता के कारण पूरे भारत में फसलें बर्बाद हुईं, जिसका प्रभाव ओडिशा के कुछ हिस्सों पर भी पड़ा। चूंकि यह अकाल अखिल भारतीय स्तर पर था, इसलिए ओडिशा में अनाज की कीमतें तेजी से बढ़ गईं। पड़ोसी प्रांतों (जैसे मध्य प्रांत) में भीषण कमी के कारण ओडिशा से अनाज का निर्यात बढ़ गया, जिससे स्थानीय बाजारों में कमी पैदा हुई।

तब संबलपुर मध्य प्रदेश का एक उपनगरीय जिला था। 3 जून से 19 अगस्त 1899 तक, बारिश रुकने से पहले संबलपुर में 39 इंच और बरगढ़ में 31 इंच बारिश हुई। कम बारिश की वजह से फ़सलें पूरी तरह बर्बाद हो गईं। ज़िले के कुछ हिस्सों में जहाँ सिंचाई की व्यवस्था थी, वहाँ किसानों को आधी फ़सल ही मिली। पंद्रह साल पहले, चावल रुपये में दो महन बिकता था। 1900 में, यह रुपये में छह सेर बिका। इस समय, जिले के बाहर से बड़ी संख्या में लोग मदद के लिए रायपुर, बिलासपुर और आसपास के जिलों

में आए। महंत बिहारी दास और कुछ अन्य गौंतिया ने इस दौरान कई जगहों पर अन्न छत्र खोले। 1897 में, क्षेत्र के अधिकांश हिस्सों में औसत फसल उत्पादन सत्तर प्रतिशत था, फिर बारिश कम हो गई और 1899 में अकाल शुरू हो गया। अकाल के कारण, सरकार ने नवंबर 1899 से संबलपुर में प्रभावित लोगों को मुफ्त पका हुआ भोजन देना शुरू किया। 18 अगस्त 1900 को, एक दिन में अलग-अलग फ़ूड पैंट्री में सबसे ज़्यादा 84,000 लोगों को खाना खिलाया गया। सरकार ने फ़ूड पैंट्री पर चार लाख नौ सौ रुपये खर्च किए। ज़िले के अलग-अलग हिस्सों में अकाल की वजह से राहत के काम पर पच्चीस लाख एक हज़ार रुपये खर्च किए गए लेकिन वह अपर्याप्त था।

अकाल के दौरान बलांगीर और सोनपुर इलाके खास तौर पर प्रभावित हुए थे। बलांगीर में प्रशासन और निजी स्तर पर 17 फूड पैंट्री खोली गईं। फूड पैंट्री में 6980 लोगों को खाना मिला। 1899 में स्प्रिंग फीवर, हैजा और भुखमरी से 8,022 लोग मारे गए और 1900 में 42,154 लोग मारे गए। 1899 में सोनपुर में 36 इंच बारिश हुई थी। अकाल से हुई मौतों की वजह से सोनपुर की 13 परसेंट आबादी कम हो गई थी। बौद इलाका अकाल से थोड़ा प्रभावित हुआ था। खुद खरियार के ज़मींदार ने अकाल के लिए राहत काम पर 8 हज़ार रुपये खर्च किए। कलाहांडी ज़िले में फ़सल का बहुत नुकसान हुआ, अकाल जैसे हालात बन गए। इससे निपटने के लिए कालाहांडी के कुछ इलाकों में अन्नछत्र खोला गया।

अकाल प्रभावित पश्चिमी भारत से कई लोग काम की तलाश में ओडिशा और अन्य पूर्वी राज्यों की ओर आए। साथ ही, ओडिशा के प्रभावित इलाकों से भी लोगों ने बेहतर अवसरों के लिए प्रवासन किया। कुपोषण के कारण लोगों की प्रतिरोधक क्षमता कम हो गई, जिससे हैजा और मलेरिया जैसी महामारी बीमारियाँ फैल गईं, जो उस समय के अकालों का एक विशेष कुप्रभाव था। 1866 की त्रासदी के बाद विकसित की गई 'अकाल संहिता' के कारण ब्रिटिश सरकार 1899 में कुछ हद तक सतर्क थी। कुछ स्थानों पर राहत शिविर और सार्वजनिक कार्य (जैसे सड़क निर्माण) शुरू किए गए। राहत के बावजूद, ब्रिटिश नीति के तहत "निर्भरता" को रोकने के नाम पर बहुत सीमित / अपर्याप्त सहायता प्रदान की थी, जिससे कई गरीब परिवारों को पूरी मदद नहीं मिल सकी। इस अकाल ने क्षेत्र की सामाजिक-आर्थिक संरचना को गहरा आघात पहुँचाया और औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों के विरुद्ध राष्ट्रवादी चेतना को और अधिक मजबूत किया।

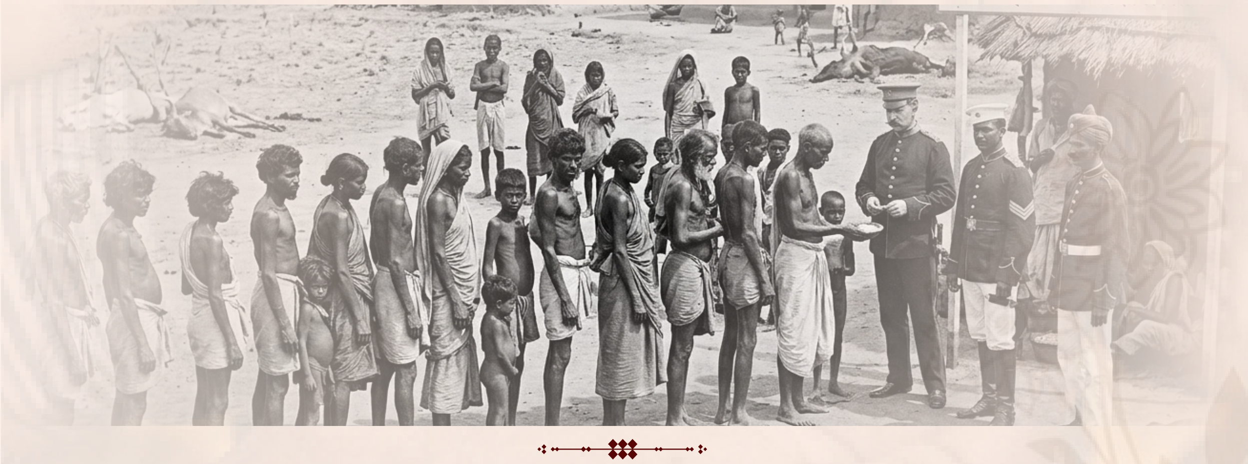

श्रीलंका- एक खूबसूरत देश

श्री महेश्वर साहु
व. लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीलंका की मेरी यात्रा मेरे जीवन की एक अप्रत्याशित घटना थी। मुझे वह दिन याद है जब मुझे एक अनजान कॉल आया था। आमतौर पर मैं अनजान लोगों की कॉल नहीं उठाता लेकिन उस दिन पता नहीं क्यों मैंने वह कॉल उठाया। अनजान कॉलर ने मुझे बताया कि सर, आप श्रीलंका और इज़राइल जा रहे हैं। मुझे लगा कि कोई मज़ाक कर रहा है क्योंकि पिछले दो सालों से मैंने कोई परीक्षा नहीं दी थी। बाद में पता चला कि मुझे श्रीलंका और इज़राइल के दूतावास ऑडिट के लिए नामांकित किया गया था। मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। प्रस्थान की तारीख तय हो गई। उससे पहले मैंने अपनी टीम के सदस्यों से बात की और मैं बहुत भाग्यशाली था कि मेरी टीम के सदस्य मेरे जैसे ही मिलनसार थे। नई दिल्ली में प्रशिक्षण के दौरान मेरी मुलाकात अपने टीम लीडर और एक अन्य सदस्य से हुई। हम 25 दिसंबर 2024 को श्रीलंका के लिए रवाना हुए। हमने औपचारिक रूप से चर्चा की कि कार्यदिवसों में हम काम करेंगे। हम कार्यदिवसों में 14 से 15 घंटे काम करेंगे और छुट्टियों का आनंद लेंगे। सभी इस पर सहमत हुए।

श्रीलंका में अपने पहले शनिवार और रविवार को हमने सिगिरिया का दौरा किया। हमने स्थानीय ड्राइवर की मदद से कई जगहों का दौरा किया, जो अंग्रेजी में बहुत कुशल नहीं था लेकिन उसने किसी तरह काम चला लिया। हमने रामायण में वर्णित पौराणिक राजा रावण के स्वर्ण महल सिगिरिया और कई पर्यटक स्थलों और समुद्र तटों का भ्रमण किया। हमने देखा कि श्रीलंका के लोग पर्यटकों को धोखा नहीं देते।

बाद में मुझे पता चला कि द्वीप की मुख्य आय पर्यटन से होती है। सरकार ने शायद पर्यटकों को परेशान न करने के निर्देश दिए होंगे। श्रीलंका की विभिन्न किस्मों के चाय लिए भी प्रसिद्ध है। हमने पास ही स्थित डैमरो चाय बागान और चाय प्रसंस्करण कारखाने का दौरा किया। हमने वहां से चाय भी खरीदी।

श्रीलंका की संस्कृति भारत की समृद्ध संस्कृति से मिलती-जुलती है। अपनी यात्रा के दौरान हमने देखा कि लोग बहुत अनुशासित और नियमों का पालन करने वाले हैं। श्रीलंका में सड़क किनारे शौच करना मना है और सभी होटलों को निर्देश दिया गया है कि वे पर्यटकों और विदेशियों को अपने होटल और रेस्तरां का उपयोग करने की अनुमति दें। एक और महत्वपूर्ण बात जो मैं बताना चाहता हूँ वह यह है कि कोई भी सड़क पर थूकता नहीं है। स्वयंसेवी समूह, विशेष रूप से युवा समूह नियमित रूप से समुद्र तटों की सफ़ाई करते हैं। विभिन्न धर्मों के लोग सह-अस्तित्व में रहते हैं।

दुनिया के अन्य लोगों को श्रीलंका के लोगों से शांतिप्रियता, सादगी, पारिवारिक बंधन और सामुदायिक जीवन के सिद्धांतों को सीखना चाहिए।

मायापुर-नवद्वीप की कहानी

श्री मिन्टू हालदार
लेखापरीक्षक

गंगा नदी के पवित्र तट पर स्थित नवद्वीप और मायापुर बंगाल का एक अत्यंत पवित्र और ऐतिहासिक स्थान है। यह क्षेत्र न केवल भौगोलिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि भक्ति, धर्म और मानव प्रेम की महान कहानियों के लिए भी चिरस्मरणीय है।

कुछ वर्षों पूर्व नवद्वीप ज्ञानचर्चा का एक प्रसिद्ध केंद्र था। यहाँ असंख्य पंडित, छात्र और साधु रहते थे। इसी नवद्वीप में 1486 ईस्वी में फाल्गुनी पूर्णिमा की पवित्र रात को श्री चैतन्य महाप्रभु का जन्म हुआ था। बचपन में उनका नाम निमाई पंडित था। उनके जन्म के समय चारों ओर हरिनाम का ध्वनि उठी थी और प्रकृति भी आनंद से मुखर हो उठी थी।

निमाई पंडित असाधारण मेधावी थे। कम उम्र में ही वे संस्कृत और शास्त्र में पारंगत हो गए। लेकिन बाद में उनके जीवन में एक महान परिवर्तन आया। उन्होंने महसूस किया कि ज्ञान या आचार नहीं, ईश्वर प्रेम ही मानव की मुक्ति का मार्ग है, तबसे उन्होंने भक्ति का मार्ग प्रचार करना शुरू किया। नवद्वीप की सड़कों पर उन्होंने नाम संकीर्तन शुरू किया - "हरे कृष्ण, हरे कृष्ण" ध्वनि से पूरा नगर मुखर हो उठा। जात-पात, अमीर-गरीब के भेदभाव को भूलकर लोग एक साथ ईश्वर का नाम गाने लगे। यह आंदोलन बाद में गौड़ीय वैष्णव धर्म के रूप में विश्वभर में प्रसिद्ध हुआ।

अंततः श्री चैतन्य महाप्रभु ने सन्यास ग्रहण किया और नवद्वीप छोड़ दिया लेकिन उनका जन्मस्थान मायापुर हमेशा भक्तों के लिए पवित्र तीर्थस्थल बना रहा। आज के मायापुर में विशाल इस्कॉन मंदिर बना है, जहाँ देश-विदेश के भक्त आकर भक्ति और शांति की खोज करते हैं। आज भी नवद्वीप और मायापुर की हवा में वह हरिनाम की ध्वनि, वह भक्ति का प्रकाश महसूस होता है। गंगा का शांत प्रवाह इस महाकाव्यिक कहानी का साक्षी है - जहाँ प्रेम, मानवता और ईश्वरभक्ति एक हो गई है।

मायापुर में विदेशियों की भूमिका :-मायापुर श्री चैतन्य महाप्रभु की जन्मस्थली और गौड़ीय वैष्णव धर्म का प्रमुख तीर्थक्षेत्र है। इस स्थान को विश्वस्तर पर परिचित बनाने में विदेशियों की भूमिका विशेष उल्लेखनीय है। मुख्य रूप से इस्कॉन (ISKCON) के माध्यम से विदेशी भक्तों का आगमन और उनकी गतिविधियों ने मायापुर का महत्व कई गुना बढ़ा दिया है। 1966 में श्री ए. सी. भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद ने इस्कॉन की स्थापना की। उनके प्रयासों से यूरोप, अमेरिका, रूस, जापान सहित कई देशों के लोग गौड़ीय वैष्णव धर्म की ओर आकर्षित हुए। इन विदेशी भक्तों ने मायापुर में स्थायी रूप से रहना शुरू किया और धर्म प्रचार में जुट गए। विदेशी लोग भी मायापुर में मंदिर निर्माण, आश्रम संचालन, नाम संकीर्तन, ग्रंथ अनुवाद और धार्मिक शिक्षा के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। वे श्री चैतन्य के दर्शन को अपने देशों में फैला रहे हैं, जिससे मायापुर एक अंतरराष्ट्रीय तीर्थक्षेत्र बन गया है। इसके अलावा, विदेशियों की उपस्थिति से मायापुर का आर्थिक और सामाजिक विकास हुआ है। पर्यटन बढ़ा है, स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर बने हैं और शिक्षा व स्वास्थ्य सेवाओं में भी सुधार हुआ है। अंत में, विदेशियों के निष्ठा, त्याग और सेवा के माध्यम से मायापुर आज विश्वभक्ति का केंद्र बन गया है। उन्होंने मायापुर को न केवल भारत का बल्कि पूरे विश्व का एक पवित्र धार्मिक स्थल बना दिया है।

मायापुर का इस्कॉन मंदिर, जिसे चंद्रोदय मंदिर भी कहा जाता है, एक प्रसिद्ध पर्यटन और तीर्थ स्थल है। 1972 में श्री ए. सी. भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद ने इस मंदिर का शिलान्यास किया था। यह दुनिया का सबसे बड़ा कृष्ण मंदिर और हिंदुओं का एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है ।

मंदिर का मुख्य आकर्षण राधाकृष्ण की मूर्ति है, जो दर्शकों को आकर्षित करती है। मंदिर परिसर में कई फव्वारे, हरे-भरे मैदान और सुंदर बाग़ हैं, जो पर्यटकों के लिए एक शांतिपूर्ण वातावरण प्रदान करते हैं। मायापुर इस्कॉन मंदिर में रहने के लिए विभिन्न प्रकार के होटल और गेस्टहाउस हैं, जैसे गदाधवन, गीताभवन, ईशोद्यान भवन आदि । यहाँ भक्तों के लिए प्रसाद और अन्य भोजन की व्यवस्था है । मायापुर इस्कॉन मंदिर जाने के लिए कोलकाता से बस और टैक्सी मिलते हैं। निकटतम रेलवे स्टेशन कृष्णनगर है, वहाँ से ई-रिक्शा या ऑटो रिक्शा से मायापुर पहुँचा जा सकता है।

हीराकुद बाँध देखने चलें ?

श्रीमती मुस्कान मिश्र
पत्नी- श्री बिक्रम मिश्र, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

महानदी जब ज़्यादा ही जोश में आ जाए और बाढ़ बोलने लगे 'आज सब बहा दूँगी', तब हीराकुद बाँध मानो पानी का ट्रैफिक पुलिस बन जाता है, जो बोल रहा हो– रुको ज़रा, सब्र करो! जब ज़रूरत हो, वहाँ पानी को रोकता है और जब ज़रूरत हो छोड़ देता है । यह बाँध इतना लंबा है कि अगर एक सिरे से दूसरे सिरे तक चलो, तो लगता है जैसे नदी नहीं, मैराथन चल रहे हों। लगता है जैसे नदी को साइड से पकड़कर कह रहा हो –'धीरे बहो, अभी टाइम है!' महानदी भी रोज़ सोचती होगी —'इतना कंट्रोल ? थोड़ी तो आज़ादी दो !'

यह बाँध सिर्फ पानी नहीं रोकता, बल्कि उससे बिजली भी बनाता है, खेतों को पानी देता है, लोगों को सेल्फी लेने का शानदार पर्यटन-स्थल देता है, छात्रों को प्रोजेक्ट का पक्का टॉपिक भी देता है और सामान्य ज्ञान के परीक्षार्थियों को सिरदर्द भी। आज़ादी के बाद बना यह बाँध साबित करता है कि अगर सही प्लानिंग हो, तो पानी को भी लाइन में खड़ा किया जा सकता है। तो चलिए जानते हैं इस बाँध के बारे में ।

इस बाँध को महानदी पर इसलिए बनाया गया, क्योंकि महानदी की बाढ़ हर साल ओडिशा में भारी तबाही मचाती थी। 1937 की भीषण बाढ़ के बाद इस प्रोजेक्ट की जरूरत महसूस हुई। भारत के महानतम इंजीनियर भारतरत्न सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैय्या ने इसका प्रस्ताव रखा और इसकी आधारशिला 15 मार्च 1946 को ओडिशा के तत्कालीन राज्यपाल सर हॉथोर्न लुईस ने रखी थी। इस जलाशय परियोजना का निर्माण कार्य 1948 में शुरू हुआ था, जो कि 1953 में पूरा हुआ। इसका औपचारिक उद्घाटन 13 जनवरी, 1957 को भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने किया था। यह स्वतंत्रता के बाद भारत की पहली बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाओं में से एक है। इस विशाल परियोजना की कुल लागत 1957 में 100.02 करोड़ रुपए आंकी गई थी। हीराकुदबांध में कुल 98 गेट हैं, जिनमें 64 स्लुइस गेट और 34 शिखर गेट शामिल हैं। ये गेट बांध से पानी छोड़ने और बाढ़ नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, साथ ही बिजली उत्पादन में भी इनका योगदान होता है। यह मिट्टी, कंक्रीट और पत्थर से बना एक संयुक्त बांध है । इसकी कुल लंबाई लगभग 25.8 किलोमीटर है और इसे भारत का सबसे लंबा मिट्टी से बना बाँध माना जाता है, जो इसे इंजीनियरिंग का एक अद्भुत उदाहरण बनाता है। इतना लंबा बाँध कि नदी भी सोच में पड़ जाए, 'अरे भाई, ये खत्म ही नहीं हो रहा!'

इस जलविद्युत परियोजना की कुल बिजली उत्पादन क्षमता 347.5 मेगावाट है। इसके दो बिजलीघर बुर्ला में

स्थित हैं। अपनी 743 किलोमीटर तक विस्तारित जल क्षमता के कारण, इसे एशियाई महाद्वीप की सबसे बड़ी मानव निर्मित झील भी माना जाता है।

परियोजना की लाभ और महत्व:

- महत्व: यह स्वतंत्रता के बाद भारत की प्रमुख बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाओं में से एक है।
- सिंचाई: इस बांध से दो नहरें निकलती हैं, यानी बरगढ़ नहर जो संबलपुर, बलांगीर, बरगढ़, व सोनपुर जिलों में और सासन नहर, जो संबलपुर और झारसुगुड़ा जिलों में 1,55,635 हेक्टेयर रबी और 1,08,385 हेक्टेयर खरीफ फसलों की सिंचाई की सुविधा प्रदान करती है। सिंचाई के अलावा औद्योगिक इकाइयों को जल आपूर्ति करती है।
- बिजली उत्पादन: बांध से बिजली उत्पादन होता है, जिससे ओडिशा और आसपास के औद्योगिक इकाइयों को आपूर्ति की जाती है ।
- बाढ़ नियंत्रण: मानसून के दौरान भारी बारिश होने पर, हीराकुद, कटक, पुरी आदि जिलों के 9,500 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को बाढ़ से बचाता है। बांध पानी को रोककर निचले इलाकों को विनाशकारी बाढ़ से बचाता है।
- जलाशय: हीराकुदबांध से बना जलाशय, जिसे हीराकुद झील के नाम से जाना जाता है, क्षेत्रफल के हिसाब से एशिया की सबसे बड़ी मानव निर्मित झील होने का खिताब भी रखता है।
- कैटल आईलैंड: यह हीराकुद जलाशय के सबसे बाहरी हिस्से में स्थित है। यहाँ वन्य मवेशियों का एक बड़ा झुंड रहता है।
- मीनार: जवाहर मीनार और गांधी मीनार हीराकुंड बांध के पास स्थित हैं। जवाहर मीनार पर उन सभी मजदूरों की याद में एक पट्टिका लगी है, जिन्होंने इसके निर्माण के दौरान अपनी जान गंवाई थी। गांधी मीनार 65 फीट से ज़्यादा ऊंची है, जहाँ से आप बांध का शानदार नज़ारा देख सकते हैं। हीराकुंड रोपवे जवाहरलाल नेहरू गार्डन और गांधी मीनार को जोड़ता है।
- पर्यटन: प्राकृतिक दृश्यों और विशाल जलाशय के कारण यह एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल भी है। गांधी मीनार से प्राकृतिक सौंदर्य और विशाल जलराशि का अद्भुत दृश्य देखने को मिलता है। नेहरू पार्क और बड़ी झील सर्दियों में पर्यटकों को यहाँ आने के लिए आकर्षित करते हैं। जवाहर पार्क मीनार से हीराकुदबांध, झील और बारापहाड़ (बारह पहाड़ियों) के आस-पास के जंगलों के खूबसूरत नज़ारे दिखते हैं। जवाहर पार्क और गांधी मीनार संबलपुर शहर के पास फैमिली पिकनिक के लिए सबसे अच्छी जगह हैं।

इस बाँध के निर्माण के दौरान सैकड़ों गाँवों को विस्थापित होना पड़ा, जिससे यह विकास और त्याग—दोनों की कहानी कहता है। जो भी हो, हीराकुद वर्तमान में हमारे राज्य में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। चिंताजनक बात यह है कि बाँध धीरे-धीरे कमजोर हो रहा है और इसकी जल धारण क्षमता भी धीरे-धीरे कम हो रही है, ऐसे में इस बड़े बाँध का उचित रखरखाव और इसका आधुनिकीकरण आवश्यक है।

आज यह बाँध न केवल ऊर्जा और पानी का स्रोत है, बल्कि हीराकुद बाँध हमें यह सिखाता है कि प्रकृति और मानव कौशल के सहयोग से कैसे बड़े परिवर्तन संभव हैं।

मुंबई – सपनों का शहर

श्री निरुपम कर्मकार
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

मुंबई को यूँ ही "सपनों का शहर" नहीं कहा जाता। यह शहर हर उस व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करता है, जो बड़े सपने देखता है और उन्हें पूरा करने का साहस रखता है। देश के कोने-कोने से लोग रोज़गार, शिक्षा, व्यापार और कला के क्षेत्र में सफलता पाने के लिए यहाँ आते हैं। मुंबई हर किसी को मौका देती है—चाहे वह एक साधारण मज़दूर हो या कोई बड़ा उद्योगपति।

यह शहर कभी नहीं सोता। दिन-रात चलती लोकल ट्रेनें, चमकती सड़कों पर दौड़ती गाड़ियाँ और समुद्र की लहरों के साथ बहता जीवन—सब मिलकर मुंबई को एक अनोखी पहचान देते हैं। यहाँ की तेज़ रफ्तार ज़िंदगी लोगों को मेहनती और आत्मनिर्भर बनाती है। मुंबई सिखाती है कि कठिनाइयों के बावजूद आगे बढ़ते रहना ही सफलता की कुंजी है।

मुंबई भारतीय सिनेमा की राजधानी भी है। बॉलीवुड ने न जाने कितने कलाकारों को पहचान दी है। छोटे कस्बों से आए युवाओं ने यहाँ अपने अभिनय और प्रतिभा के बल पर नाम कमाया है। यही कारण है कि अभिनेता बनने का सपना देखने वाले युवाओं के लिए मुंबई किसी तीर्थ से कम नहीं।

यह शहर विविधताओं से भरा है। यहाँ हर भाषा, हर संस्कृति और हर धर्म के लोग साथ रहते हैं। गणेश चतुर्थी, ईद, दिवाली और क्रिसमस—सभी त्योहार यहाँ समान उत्साह से मनाए जाते हैं। मुंबई की यही एकता और सहनशीलता इसे महान बनाती है।

हालाँकि, मुंबई में जीवन आसान नहीं है। भीड़, महँगाई और छोटी-सी जगह में रहने की मजबूरी कई चुनौतियाँ पैदा करती है। झुग्गियों में रहने वाले लोग भी अपने सपनों को सँजोए हुए हैं। वे कठिन परिश्रम से अपने और अपने बच्चों के भविष्य को बेहतर बनाने का प्रयास करते हैं। यही संघर्ष मुंबई की असली आत्मा है।

मुंबई केवल इमारतों और सड़कों का शहर नहीं है, बल्कि आशा, संघर्ष और सफलता की कहानी है। यह शहर हर आने वाले को यह विश्वास देता है कि यदि हौसले बुलंद हों और मेहनत सच्ची हो, तो कोई भी सपना अधूरा नहीं रहता। इसी कारण मुंबई को सही मायनों में "सपनों का शहर" कहा जाता है।

अस्वस्थ खाना

श्री सुदीप कुमार बिश्वास
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

पेट की अजीब-सी बढ़ती तोंद
देख हँसते हैं लोग शरारती,
वज़न यूँ ही बढ़ता जा रहा,
साँस भी लगे अब भारी-भारी।
दिल के रोग या स्ट्रोक का डर
मन में चुपके से परेशान कर जाए,
सोचा अब से घर के भीतर
सही भोजन ही अंदर आए।
क्यों अस्वस्थ खाना मेरी
जान का दुश्मन बन जाएगा?
रात भर यही सोच-विचार कर
नियमों का नक़्शा बन पाया।
चर्बी भरा भोजन चाहे
कितना ही क्यों न लुभाए,
अब तो जीवन कटेगा मेरा
बिना बिरयानी–मटन के पास जाए।

सोचा बस दाल, साग- सब्ज़ी
ही अब खाया जाएगा,
पर सुबह का नाश्ता देख
सर ही घूमता जाएगा।
मेज़ पे सब्ज़ी कहाँ जनाब?
न उसका नामो-निशान,
"आओ, खाओ!" पुकार रहे हैं
रोटी और बटर चिकन की शान।
चारों ओर से न्योता ऐसा,
खाने का आमंत्रण भारी,
सच कहूँ, इंकार करने की
कोई वजह ही नहीं हमारी।
कसम खाई थी जिस दिन मैंने,
उसी दिन बिरयानी आ गई!
"कल से नियम निभाऊँगा,
आज तो खा ही ली जाए!"

खामोश सीढ़ियाँ

श्री गणेश्वर साहु
लेखापरीक्षक

शहर की सुबह हमेशा शोर से शुरू होती थी। बसों के हॉर्न, दुकानों के शटर, मोबाइल की घंटियां- जैसे हर कोई किसी अनदेखी दौड़ में भाग रहे हों। सूरज निकलता तो था लेकिन उसे देखने का समय किसी के पास नहीं होता। लोग उठते थे, तैयार होते थे और निकल जाते थे, बिना यह सोचे कि वे जा कहाँ रहे हैं। इस शहर में रुकना कमजोरी माना जाता था और सोचना समय की बर्बादी। इसी शहर की एक पुरानी कॉलोनी में तीसरी मंजिल के एक साधारण से फ्लैट में नीरज रहता था।

हर सुबह उसकी शुरुआत भी बाकी लोगों जैसी होती थी। अलार्म बजता, वह बंद करता, फिर 5 मिनट और मांगता। 5 मिनट अक्सर 15 बन जाते। फिर जल्दी-जल्दी तैयार होना, आधा नाश्ता और माँ की आवाज- "देर हो रही है"। नीरज बिना जवाब दिए निकल जाता। वह जानता था कि जवाब देने से कुछ बदलने वाला नहीं है।

नीरज की जिंदगी में कुछ भी बहुत बुरा नहीं था। यही बात उसे सबसे ज्यादा परेशान करती थी। उसके पास घर था, परिवार था, पढ़ाई थी लेकिन उसके भीतर कहीं एक खालीपन था, जिसे वह नाम नहीं दे पाता था। वह खालीपन दुख नहीं था क्योंकि दुख का कारण होता है। यह बस एक अजीब-सी चुप्पी थी, जो हर दिन उसके साथ चलती थी- बस स्टॉप तक, कॉलेज के गलियारों तक और रात को बिस्तर तक।

कॉलेज में नीरज उन छात्रों में गिना जाता था जिनके बारे में प्रोफेसर कहते हैं- "ठीक है, चल जाएगा।" न बहुत होशियार, न लापरवाह। वह क्लास में बैठा रहता, नोट्स बनाता लेकिन मन कहीं और भटकता रहता, कभी खिड़की के बाहर, कभी भविष्य के किसी धुंधले कोने में। उसके दोस्त थे लेकिन दोस्ती ज्यादा सतही थी। हंसी-मजाक, परीक्षाओं की शिकायतें, प्लेसमेंट की बातें, सब कुछ चलता था लेकिन किसी ने कभी किसी से यह नहीं पूछा कि वह असल में क्या चाहता है। शायद इसीलिए क्योंकि कोई खुद भी नहीं जानता था।

नीरज जब भी अपने भविष्य के बारे में सोचता, उसे एक सीधी सड़क दिखाई देती- कॉलेज, नौकरी, शादी, जिम्मेदारियाँ। सड़क साफ थी, सुरक्षित थी लेकिन उसे देखकर उसके भीतर कोई हलचल नहीं होती थी। उसे लगता था जैसे यह सड़क उसकी नहीं है लेकिन और कोई रास्ता भी नजर नहीं आता था। उसके

पिता इसी सड़क पर चल चुके थे। पिता सुबह दफ्तर जाते, शाम को लौटते और थककर टीवी के सामने बैठ जाते। कभी-कभी वे नीरज से कहते, "बस पढ़ाई पूरी कर लो, फिर सब अपने आप ठीक हो जाएगा।" नीरज सिर हिला देता। उसे समझ नहीं आता कि "सब" से उनका क्या मतलब है। माँ ज्यादा बोलती नहीं थी। वह घर, बहन और सिलाई के काम में लगी रहती थी लेकिन माँ की आंखें बहुत कुछ कहती थी- चिंता, उम्मीद और थोड़ा-सा डर। नीरज वह सब देखता था, लेकिन शब्द नहीं ढूंढ पाता था।

दिन ऐसे ही बीत रहे थे। एक दिन बारिश हुई- अचानक, बिना चेतावनी के। क्लास जल्दी छूट गई। छात्र भागते हुए बाहर निकल गए। नीरज भी निकला, लेकिन गेट तक पहुंच कर रुक गया। उसे घर जाने की जल्दी नहीं थी। शायद उसे कहीं भी जाने की जल्दी नहीं थी। वह वापस मुड़ गया। कॉलेज की पुरानी इमारत में- जहाँ वह कभी नहीं जाता था। वहाँ नई क्लासेज नहीं लगती थी।

दीवारों पर सीलन थी और खिड़कियां अक्सर बंद रहती थी। लोग कहते थे, वहाँ कुछ नहीं है। शायद यही बात नीरज को वहाँ ले गई। वह गलियारे में धीरे-धीरे चल रहा था, अचानक उसकी नजर एक सीढ़ी पर पड़ी। सीढ़ी साधारण नहीं थी। उसपर धूल जमी हुई थी, जैसे कोई वहाँ बरसों से ना गया हो। ऊपर एक फीकी-सी पट्टी लगी थी- "प्रवेश वर्जित।" सीढ़ियाँ ऊपर नहीं, थोड़ी तिरछी लग रही थी, जैसे किसी और दिशा में जाती हो। नीरज वहीं खड़ा रहा। उसे पता नहीं था कि वह क्या कर रहा है। बस इतना महसूस हो रहा था कि अगर वह अभी लौट गया, तो कुछ हमेशा के लिए छूट जाएगा- क्या.... ये उसे खुद भी नहीं पता था।

उसने पहला कदम रखा। सीढ़ियां खामोश थी। ना कोई आवाज, ना कोई चेतावनी। हर कदम के साथ उसके भीतर की आवाज थोड़ी तेज होती जा रही थी। वह ऊपर पहुँचा। वहाँ एक छोटा-सा कमरा था। कमरा साफ नहीं था लेकिन सलीके से बिखरा हुआ था। कुछ पुरानी कुर्सियाँ, एक लकड़ी की मेज और दीवारों पर हाथ से लिखे वाक्य। कोई पोस्ट नहीं, कोई नोटिस नहीं- बस विचार.....

" जो सवाल पूछता है वही जिंदा रहता है।"

"डर का मतलब रुकना नहीं होता"

"औसत लोग ही दुनिया को संभालते हैं।"

नीरज ने पढ़ा और चुप हो गया। कमरे के एक कोने में एक बूढ़ा आदमी बैठा था। सफेद बाल, पतला सा शरीर और आंखों में ऐसी गहराई जैसे उन्होंने बहुत कुछ देखा हो और बहुत कुछ समझ कर छोड़ दिया हो। " आखिर आ ही गए," बूढ़े आदमी ने कहा। नीरज चौंक गया, "आप मुझे जानते हैं?" बूढ़ा आदमी मुस्कुराया....

वह बूढ़ा आदमी प्रोफेसर प्रदीप थे। कभी इसी कॉलेज में पढ़ाते थे, अब सेवानिवृत। उन्होंने यह कमरा उन छात्रों के लिए खोल रखा था, जो बिना नक्शे के भटक रहे हों। नीरज वहाँ आने लगा। शुरुआत में वह सिर्फ सुनता था। दूसरे छात्र आते- कोई असफलता से टूटा हुआ, कोई दबाव से थका हुआ, कोई खुद से नाराज। कोई भाषण नहीं देता था। बस बातें होती थीं- धीमी, ईमानदार, कभी-कभी तकलीफदेह।

नीरज ने पहली बार महसूस किया कि उसका खालीपन अकेला नहीं है। धीरे-धीरे उसने बोलना शुरू किया। अपने डर के बारे में, अपनी उलझन के बारे में, अपने "बीच में फंसे होने" के बारे में। कोई हँसा नहीं। किसी ने उसे छोटा नहीं समझा। यहीं से नीरज बदलने लगा।

बदलाव बाहर से नहीं दिखता था। वह अब भी वही कपड़े पहनता था, वही बस लेता था लेकिन भीतर कुछ जाग गया था। वह अब सवालों से भागता नहीं था। जब कॉलेज में रिसर्च प्रोजेक्ट का नोटिस लगा, नीरज ने पहली बार फॉर्म भरने से पहले यह नहीं सोचा कि, "मैं कर पाऊँगा या नहीं," बल्कि यह सोचा कि "अगर नहीं किया तो क्या होगा?" उसका चयन आखिरी नंबर पर हुआ।

काम मुश्किल था। कई बार उसे लगा कि वह यहाँ फिट नहीं बैठता लेकिन इस बार उसने सीढ़ियों से उतरने का फैसला नहीं किया। उसने रुकना सीखा, सीखना सीखा। घर में विरोध हुआ, पिता को लगा कि वह भटक रहा है। माँ चुप रहीं लेकिन उनके हाथ नीरज के सिर पर ज्यादा देर रुकने लगे। फिर एक और परीक्षा आई- पैसों की कमी। नीरज के सामने नौकरी छोड़कर सुरक्षित रास्ता चुनने का विकल्प था। यह वही सीधी सड़क थी।

उस रात वह बहुत देर तक जागता रहा। उसे खामोश सीढ़ियां याद आईं। अगले दिन उसने संघर्ष का रास्ता चुना- आधा काम, आधी पढ़ाई, पूरी ईमानदारी। साल बीत गया। नीरज कोई बड़ा नाम नहीं बना लेकिन उसने ऐसे प्रोजेक्ट पर काम किया जहाँ औसत कहे जाने वाले लोग अपनी आवाज पहचानते थे। वह खुद को पहचान चुका था।

एक दिन वह फिर उसी कॉलेज में पहुँचा। पुरानी इमारत की मरम्मत हो चुकी थी। सीढ़ियां साफ थी। 'प्रवेश वर्जित' की पट्टी हट चुकी थी। प्रोफेसर प्रदीप वहाँ नहीं थे। नीरज सीढ़ियों पर बैठ गया। उसने महसूस किया कि यह सीढ़ियां अब खामोश नहीं थीं। इनमें उन सब लोगों की आवाज थी जो कभी डर के बावजूद ऊपर आए थे। उसने मुस्कुरा कर सोचा- जिंदगी में कुछ रास्ते सीधे नहीं होते। वे पहले हमें रोकते हैं, फिर मोड़ते हैं... और जो उन खामोश सीढ़ियों पर चढ़ जाता है वह मंजिल भले न पाए लेकिन खुद को जरूर पा लेता है....और शायद यही सबसे जरूरी है।

मैं कौन हूँ?

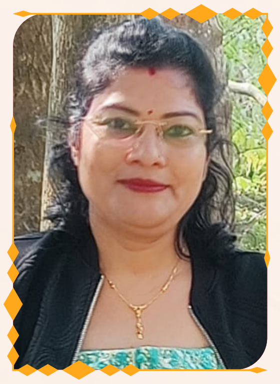

श्रीमती क्षणप्रभा बेहेरा
पत्नी - श्री रामचंद्र बेहेरा, स.लेप.अ.

मैं क्या हूँ-
एक साँस जो समय की हथेली पर काँपती है,
या वह मौन हूँ
जो शब्दों के जन्म से पहले था?

मैं मिट्टी की देह में कैद
कोई स्वप्न हूँ क्या,
या स्वप्नों को जन्म देने वाली
अनदेखी चेतना?

मुझसे पूछा गया- "तुम कौन हो?"
मैं हँसी,
क्योंकि जो उत्तर था
वह प्रश्न से भी गहरा था।

मैं वह दीप हूँ
जो स्वयं जलकर पूछता है-
क्या मेरा प्रकाश मेरा है,
या अंधकार की अनुमति?

मैं इतिहास नहीं,
पर हर युग का दर्द मेरी नसों में बहता है।
मैं भविष्य नहीं,
फिर भी आशा मेरे रक्त में धड़कती है।

मैं वह विराम हूँ
जहाँ भाग्य भी रुककर सोचता है,
और वह पुकार हूँ
जिसे ईश्वर भी सुनकर मौन हो जाता है।

न मैं केवल देह हूँ,
न आत्मा का दावा करता हूँ-
मैं तो वह संघर्ष हूँ
जो हर जन्म में स्वयं को खोजता है।

यदि मेरा अस्तित्व पूछो-
तो सुनो,
मैं प्रश्न हूँ...
और उत्तर बनने की जिद भी।

सकारात्मक सोच आपका शक्तिशाली हथियार

श्रीमती नीतू चंद्रा
पत्नी- श्री विभाष चंद्र, स.लेप.अ.

सकारात्मक सोच हमारे जीवन की एक महत्वपूर्ण कुंजी है। सकारात्मक सोच वह मानसिक स्थिति है जिसमें व्यक्ति हर परिस्थिति में अच्छे पक्ष को देखने का प्रयास करता है। इसमें आशा, विश्वास और आत्मविश्वास होता है। सकारात्मक सोच हमें कठिन समय में भी हिम्मत नहीं हारने देती है।

• मैं कोशिश करूंगा, मैं कर सकता हूं।

• हर समस्या का कोई ना कोई हल जरूर होता है।

सकारात्मक सोच से मन प्रसन्न रहता है और जीवन में आगे बढ़ाने की प्रेरणा मिलती है। यह हमारे जीवन को सुखद और सफल बनाती है। हमारे जीवन में सुख-दुख आते रहते हैं। ऐसी परिस्थितियों में जो व्यक्ति सकारात्मक सोच रखता है वह हर समस्या का सामना साहस के साथ करता है। इसका प्रभाव हमारे मन, शरीर और व्यवहार तीनों पर पड़ता है।

* इससे मन शांत रहता है, तनाव, डर और चिंता कम होती है। आत्मविश्वास बढ़ता है। शरीर स्वस्थ रहता है और नींद अच्छी आती है। साथ ही सकारात्मक सोच की वजह से निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है।

* दूसरों के साथ संबंध मधुर होते हैं। सफलता के अवसर बढ़ते हैं तथा असफलता से सीखने की भावना आती है। इस तरह सकारात्मक सोच हमें एक बेहतर इंसान बनाती है। इसलिए हमें हमेशा सकारात्मक नजरिया रखना चाहिए।

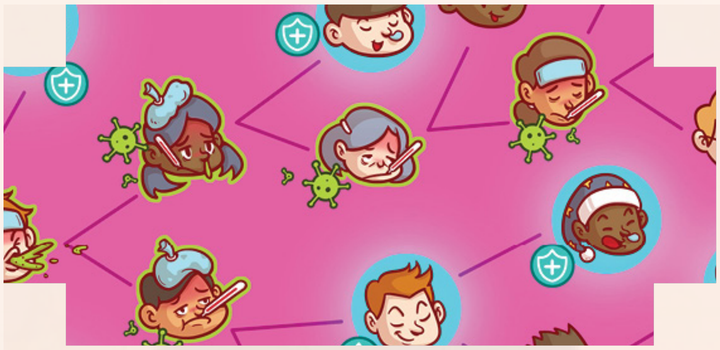

* अच्छे विचार शरीर को बीमारियों से लड़ने की शक्ति देते हैं । दिनभर सकारात्मक सोच रखने वाला व्यक्ति रात में जल्दी और अच्छी नींद सोता है । इसलिए हमेशा अच्छा सोचने की आदत डालनी चाहिए क्योंकि जैसा हम सोचते हैं वैसा ही हमारा जीवन बनता है।

* विद्यार्थियों के जीवन में सकारात्मक सोच बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह उनकी पढ़ाई, व्यवहार और भविष्य तीनों बेहतर बनाती है। सकारात्मक सोच से विद्यार्थी पढ़ाई में मन लगाकर मेहनत करता है। जो छात्र यह सोचता है कि मैं रोज अभ्यास करूंगा तो जरूर समझ जाऊंगा तो वह धीरे-धीरे अच्छा करने लगता है।

* मंच पर भाषण देते समय "मैं कर सकता हूं" सोचने वाला विद्यार्थी बिना डरे बोल पाता है । इससे विद्यार्थी खुद पर विश्वास करना सीखता है । अच्छी सोच वाला विद्यार्थी असफलता से घबराता नहीं है बल्कि वह कहता है अगली बार और मेहनत करूंगा न कि हार मान लेता है। सकारात्मक सोच से विद्यार्थी सहयोगी और विनम्र बनता है।

इस प्रकार सकारात्मक सोच जीवन को सुखमय, स्वस्थ और सफल बनाती है। अच्छा सोचने वाला व्यक्ति हर समस्या को अवसर में बदल सकता है।

असफलता अंत नहीं है यह सीखने का अवसर है। (प्रत्येक व्यक्ति के पास दो तरह की सोच होती है- सकारात्मक व नकारात्मक। नकारात्मक सोच हमें अवनति की ओर ले जाती है। वहीं सकारात्मक सोच हमें सफलता की बुलंदी पर पहुँचा देती है।)

रास्ते में पड़े हुए पत्थर को आप मार्ग की बाधा भी मान सकते हैं और चाहे तो उस पत्थर को सीढ़ी बनाकर ऊपर भी चढ़ सकते हैं। जीवन का आनंद वही लोग उठा पाते हैं जिनके सोचने का ढंग सकारात्मक होता है।

मेरी माँ

सुश्री श्रिया शालिनी बेहेरा
सुपुत्री- श्री रामचंद्र बेहेरा, स.लेप.अ.

मेरी माँ-
वह नाम नहीं,
एक पूरा युग है
जो मेरी साँसों से पहले जन्मा।

जब संसार ने
मेरे होने पर प्रश्न उठाया,
उसने अपने रक्त से
मेरा उत्तर लिख दिया।

वह चुप रहती है,
पर उसके मौन में
हज़ार प्रार्थनाएँ
ईश्वर से पहले पहुँच जाती हैं।

उसके हाथों की रेखाएँ
भाग्य नहीं,
मेरे भविष्य की
थकी हुई लिखावट हैं।

वह स्वयं टूटकर भी
मुस्कान ओढ़ लेती है,
जैसे पीड़ा उसका धर्म हो
और त्याग उसकी पहचान।

मैं गिरा तो
दुनिया ने दोष दिया,
माँ ने मुझे
अपने आँचल में छुपा लिया।

वह रानी नहीं,
फिर भी उसके चरणों में
सम्राटों का घमंड
झुककर मौन हो जाता है।

यदि ईश्वर ने
मुझसे मेरा सब कुछ माँग लिया,
तो भी मैं कहूँगा-
मेरी माँ को छोड़कर कुछ भी ले लो।

ऑपरेशन सिंदूर

सुश्री स्नेहा राउत
सुपुत्री- श्री पूर्ण चंद्र राउत, लेखापरीक्षक

हिंद देश के निवासी, सभी रंग एक हैं।
रंग-रूप, वेशभूषा चाहे अनेक हैं॥

ये पंक्तियाँ भारत की एकता को दर्शाती हैं, जो भारत की सबसे बड़ी ताकत है। हमें पता है कि भारत एक विविधता से भरा देश है जहां पर हिंदू, सिख, मुस्लिम, ईसाई सभी का वास है। यही सब मिलकर, एक होकर भारतीय नागरिक कहलाते हैं लेकिन यही एकता दुश्मनों को चुभती है, उन्हें परेशान करती है और वही लोग इसे तोड़ने के लिए प्रयास करते नहीं थकते।

उन्हीं प्रयासों में से एक प्रयास था जम्मू कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमला, जिसने 22 अप्रैल 2025 को भारत के ऊपर बहुत बड़ा आघात किया। किसी ने कल्पना भी नहीं की थी कि जो वादियां इतनी मनमोहक और सुंदर है वही एक ऐसी दर्दनाक घटना की गवाह बन जाएगी।

22 अप्रैल की सुबह, अमरनाथ यात्रा की तैयारी कर रहे तीर्थ यात्रियों का एक समूह पहलगाम क्षेत्र में रुका था। कई परिवार वहाँ हँसी-खुशी रुके थे। भारत का स्विट्ज़रलैंड कहलाने वाले पहलगाम का आनंद उठा रहे थे। अपने उन पलों को मोबाइल में कैद कर रहे थे। अचानक से पूरी वादियों में गोलियों की तड़तड़ाहट की गूंज ने

इन किलकारियों की जगह ले ली थी। यह गोलियां थीं सशस्त्र आतंकवादियों की जिन्होंने पहलगाम में अंधाधुंध गोलीबारी करना शुरू कर दिया। उन्होंने लोगों को चुनकर, धर्म के नाम पर मारना शुरू किया। स्त्रियों के सामने उन्होंने उनके सुहाग को उजाड़ दिया। यह कहानी किसी एक या दो जनों की नहीं बल्कि 26 परिवारों की है जिन्होंने अपने प्रियजनों को इस आतंकी हमले में खोया है। यह आतंकी हमला हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि आतंकवाद की यह आग अब किसी एक सीमा या धर्म की नहीं रह गई। यह समस्त मानवता के लिए खतरा है। यह घटना हमें बार-बार उसकी याद दिलाती है कि आतंकवाद का कोई धर्म नहीं, कोई जात नहीं, कोई देश नहीं होता है। यह सिर्फ हिंसा और नफरत की विचारधारा है, जो सिर्फ अहिंसक और निर्दोष लोगों को अपना निशाना बनाते हैं।

हमारे भारत में उधार रखने की प्रथा नहीं है। हमने इसका जवाब देने की ठान ली और आतंक के विरुद्ध भारत की नई परिभाषा 'ऑपरेशन सिंदूर' को जारी किया। 7 मई 2025 की रात भारतीय इतिहास में वीरता, साहस और न्याय का प्रतीक बन गई। रात के 1:05 से 1:30 तक, मात्र 25 मिनट में हुए 'ऑपरेशन सिंदूर' ने अपना बदला पूरा किया और भारत की माता को न्याय दिलाया और शहीदों को सम्मान दिया। इस ऑपरेशन में भारत ने पाकिस्तान के मुख्य आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया जैसे उन्होंने एयर स्ट्राइक में लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद के हेडक्वार्टर को नष्ट कर दिया। जिसमें कोटली और मुजफ्फराबाद समेत पंजाब प्रांत की लोकेशन शामिल थी। इसके परिणामस्वरूप भारतवासियों का आत्म सम्मान बढ़ा और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उसकी एक नई छवि बनी। यह भारत की नीति और शक्ति को दर्शाता है। अंततः इसे और एक पंक्ति शेष करूंगी:-

अब शोक नहीं, अब मौन नहीं
अब हाथों में शस्त्र हैं, हृदय में आग
और आंखों में स्वप्न नहीं संकल्प है।

छुट्टी

श्री सुदीप कुमार बिश्वास
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

छुट्टी! यह शब्द सुनते ही भीतर कहीं एक आज़ादी-सी महसूस होने लगती है। चाहे वह कुछ पलों की हो या कुछ दिनों की। भागने को आतुर हमारा मन क्या इतना सोचता है? हम सभी के भीतर कम या ज़्यादा छुट्टी के प्रति एक कमजोरी होती है और यह कमजोरी बचपन से ही शुरू होती है। उम्र के साथ-साथ छुट्टी के प्रति जो बदलाव आता है, वह दरअसल जगह के बदलने का होता है। थोड़े नीरस शब्दों में कहें तो, यह "पिंजरे का बदलना" है।

मेरी "पहली आज़ादी" या छुट्टी की तीव्र इच्छा पैदा हुई थी अंग्रेजी शिक्षा के समय में। शिक्षक की छड़ी से छुटकारा पाना ही सबसे बड़ी आज़ादी थी। कान हमेशा "घर जाओ, आज छुट्टी" सुनने की प्रतीक्षा में रहते थे। एक और बात थी—पाठ याद होने या न होने की। जो पहले गणित हल करके प्रस्तुत कर देता, उसे पहले छुट्टी मिलने की संभावना रहती। जो नहीं कर पाता, उसकी छुट्टी गणित के हल पर करने पर निर्भर करती।

उस समय छुट्टी का मतलब था किसी विशेष विषय या किसी शिक्षक की क्लास से छुटकारा। आज़ादी की इच्छा सबसे प्रबल थी। ऐसे भी दिन थे जब मन-ही-मन प्रार्थना करते थे कि आज वह क्लास न हो, उससे पहले ही छुट्टी की घंटी बज जाए।

ये सब तो बहुत पुरानी बातें हैं। हममें से बहुत-से लोग उन छोटे-छोटे आनंदों को भूल चुके हैं लेकिन क्या इससे छुट्टी की हमारी चाह कम हो जाती है? उम्र के साथ छुट्टी की आकांक्षा और भी तीव्र हो जाती है, बस उसका रूप बदल जाता है। किसी-किसी में वह गहरी साँसों के रूप में प्रकट होती है। ज़िंदगी का पहिया घुमाते-घुमाते जब मानव थक जाता है, तो चारों ओर से छुट्टी लेने के लिए मन बेचैन हो उठता है। छात्र जीवन से शुरू हुई यह छुट्टी की प्यास कम नहीं होती, बल्कि बढ़ती ही जाती है।

पढ़ाई पूरी कर जब हम कामकाजी जीवन में प्रवेश करते हैं, तो मन पर मानो छुट्टी का नशा चढ़ जाता था। हफ्ते के अंत में तय छुट्टी के दिन का इंतज़ार करते हुए मन कटी गर्दन वाले मुर्गे की तरह तड़पता रहता था। कभी-कभी काम के प्रति गहरी वितृष्णा मन को उदास कर देती है। तब एक लंबी छुट्टी की चाह छुरी सी दिल में ज़ोर मारती है। फिर ऐसा भी होता है कि प्यार और ममता से बने घर-परिवार से भी किसी-किसी

का भागने वाला मन छुट्टी चाहता है। पारिवारिक ज़िम्मेदारियों और जीवन का हिसाब-किताब मिलाते-मिलाते कई लोग थक जाते हैं। तब सीने के भीतर एक स्वार्थी-सी छुट्टी की चाह जन्म लेती है। मानो इसी छुट्टी के पीछे ही जीवन दौड़ता रहता है और एक दिन उसी जीवन से ही छुट्टी लेने के लिए तैयार होना पड़ता है। बुढ़ापे या बीमारी में, जब जीवन का पहिया धीरे-धीरे ठंडा पड़ने लगता है, तब मनुष्य सदा के लिए छुट्टी लेने को तैयार होता है।

लेकिन वही पुरानी बाधा—क्या छुट्टी माँगने सकता है?

इसलिए इंतज़ार...

उम्र के अनुसार छुट्टी की तीव्रता कम-ज़्यादा हो सकती है, लेकिन मन के किसी कोने में उसकी मौजूदगी से कोई इंकार नहीं कर सकता। मुझे लगता है, जैसे सपने और आशाएँ होती हैं, वैसे ही छुट्टी की आकांक्षा भी मानव जीवन को गतिमान रखने के लिए एक टॉनिक का काम करती है। छोटी या लंबी छुट्टी की चाह जीवन भर बनी रहती है।

पर उस अंतिम घंटी से पहले, मन बार-बार छोटी-छोटी छुट्टियों में साँस लेना चाहता है। कभी खिड़की से आती धूप में, कभी चाय के खाली कप के पास। हर थकान अपने भीतर एक अवकाश का सपना पालती है। काम के बीच अचानक आई चुप्पी भी एक तरह की छुट्टी होती है। भीड़ में खो जाना, या खुद में सिमट जाना—दोनों ही पलायन हैं। मन जब कुछ देर के लिए अपेक्षाओं से मुक्त होता है, तब छुट्टी लेने का मन करता है। यह जरूरी नहीं कि छुट्टी कैलेंडर में दर्ज हो। कभी-कभी वह अनकहे आँसू में बह जाती है। कभी किसी पुराने गीत की पंक्ति में ठहर जाती है। हम जीवन से नहीं, उसकी कठोरताओं से छुट्टी चाहते हैं पर जीवन हर बार नए बंधन के साथ हमें लौटा लाता है और हम फिर उसी घंटी की प्रतीक्षा में लग जाते हैं। शायद यही प्रतीक्षा हमें जीवित रखती है क्योंकि जिसके पास प्रतीक्षा नहीं, उसके पास आगे का रास्ता नहीं। छुट्टी एक भ्रम सही, पर मीठा भ्रम है। इसी भ्रम में आदमी खुद को सहन करना सीखता है। हर सुबह काम पर लौटते हुए, मन थोड़ा-सा पीछे रह जाता है।

वही पीछे छूटा मन छुट्टी कहलाता है और जीवन, उस छूटे हुए मन को ढूँढने की यात्रा। शायद अंतिम छुट्टी भी, उसी खोज का नाम है।

उम्र बढ़ने के साथ सारी छुट्टियों की आकांक्षा अंततः एक ही छुट्टी में आकर ठहर जाती है— जीवन से छुट्टी। केवल अंतिम छुट्टी की घंटी ही सभी छुट्टियों की चाह से मुक्ति दिला सकती है।

भारतीय शिक्षा पद्धति का परिवर्तन

श्री विक्रांत आनंद
सहा. लेखापरीक्षा अधिकारी

शिक्षा का अर्थ केवल ज्ञान अर्जित करना नहीं है बल्कि कौशल, मूल्यों और दृष्टिकोणों का विकास भी शामिल है जो व्यक्ति के समग्र विकास और समाज में प्रभावी ढंग से भाग लेने की उसकी क्षमता में योगदान देते हैं।

वैदिक काल में, भारत में शिक्षा मुख्यतः अनौपचारिक और मौखिक थी, जो परिवार, ग्राम समुदायों और मंदिरों तक सीमित थी। व्यक्ति अवलोकन, सहभागिता और बड़ों व समुदाय के सदस्यों से मौखिक रूप से ज्ञान के प्राप्त करते थे और पीढ़ी दर पीढ़ी यह प्रक्रिया अनवरत चलती रहती थी।

प्राचीन भारत में वैदिक शिक्षा प्रणाली, जो भारतीय संस्कृति की आधारशिला भी थी, मौखिक संचरण, आध्यात्मिक ज्ञान और समग्र विकास पर ज़ोर दिया जाता था । इसमें मुख्यतः चरित्र निर्माण, नैतिक सिद्धांतों और संस्कृति के संरक्षण पर ज़ोर दिया जाता था, और गुरुकुल (आवासीय विद्यालय) प्राथमिक शिक्षण वातावरण के रूप में कार्य करते थे। वैदिक काल में रचित सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ चार वेद हैं: ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद। ये ग्रंथ हिंदू धर्म के आधारभूत ग्रंथ हैं और संस्कृत साहित्य की सबसे प्राचीन साहित्य हैं। इन्हें श्रुति माना जाता है, जिसका अर्थ है "जो सुना जाता है", क्योंकि ये लिखे जाने से पहले पीढ़ियों तक मौखिक रूप से प्रसारित होते रहे।

वैदिक काल के बाद, समाज में निरंतर परिवर्तन होते रहे और साथ ही शिक्षा व्यवस्था में भी परिवर्तन हुआ। लोगों को शिक्षित करने के लिए विश्वविद्यालय और गुरुकुल जैसी शिक्षण संस्थाएँ स्थापित की गईं। शासक अपनी इच्छानुसार इसमें परिवर्तन करते रहे। नालंदा और तक्षशिला जैसे संस्थानों में उच्च शिक्षा भी उपलब्ध थी। प्रारंभिक शिक्षा व्यापक थी, जहाँ हिंदुओं के लिए पाठशालाएँ और मुसलमानों के लिए मकतब थे, जबकि चतुष्पथी या टोल जैसे उच्च शिक्षा केंद्र विशिष्ट क्षेत्रों में मौजूद थे। शिक्षा व्यवस्था में यह परिवर्तन 19वीं-20वीं शताब्दी में, ब्रिटिश काल में, पश्चिमी प्रभुत्व के आगमन के बाद आया।

19वीं सदी में भारतीय शिक्षा प्रणाली में अंग्रेजों द्वारा पश्चिमी शिक्षा की शुरुआत के साथ-साथ पारंपरिक भारतीय शिक्षण प्रणालियों के बने रहने के कारण एक महत्वपूर्ण बदलाव आया। अंग्रेजों का उद्देश्य एक ऐसी प्रणाली स्थापित करना था जो उनकी प्रशासनिक आवश्यकताओं और सांस्कृतिक प्रभाव

को पूरा करे। साथ ही इससे पश्चिमी विचारों और राष्ट्रीय चेतना का प्रसार भी हुआ। ब्रिटिश काल में कई अंग्रेजी माध्यम के संस्थान खोले गए और उन्होंने पश्चिमी शिक्षा और आधुनिक विज्ञान पर अधिक जोर दिया। इसने व्यावसायिक प्रशिक्षण और महिला शिक्षा की आवश्यकता पर भी जोर दिया, जो भारतीय शिक्षा प्रणालियों में नहीं थे, जिसका उद्देश्य भारतीयों का एक ऐसा वर्ग तैयार करना था जो औपनिवेशिक प्रशासन में सेवा कर सके। वैदिक शिक्षा और आध्यात्मिक विकास पर जोर देने वाली पारंपरिक गुरुकुल प्रणालियाँ, विशेष रूप से 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भी अस्तित्व में रहीं, जब स्वामी दयानंद सरस्वती और स्वामी श्रद्धानंद जैसे लोगों ने नए गुरुकुल स्थापित किए।

कुछ लेखकों की पुस्तकों से यह पता चलता है कि बंगाल और बिहार में स्थानीय स्कूल जारी रहे, जिन्हें स्थानीय समुदायों का समर्थन प्राप्त था और स्थानीय भाषाओं में पढ़ाया जाता था। ये स्कूल बुनियादी शिक्षा प्रदान करते थे, जिसमें पढ़ना, लिखना और अंकगणित शामिल था। स्थानीय स्कूलों की संरचना लचीली थी, जहाँ कक्षाओं को फसल के मौसम के अनुसार समायोजित किया जाता था और स्थानीय समुदाय अक्सर शिक्षकों का समर्थन करता था।

इसके अलावा कलकत्ता, बॉम्बे और मद्रास जैसे विश्वविद्यालयों और राजकोट कॉलेज तथा मेयो कॉलेज जैसे संस्थानों की स्थापना ने उच्च शिक्षा में महत्वपूर्ण प्रगति को चिह्नित किया।

भारत में शिक्षा का भविष्य तकनीकी एकीकरण, व्यक्तिगत शिक्षा, ऑनलाइन और हाइब्रिड शिक्षा और शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के एकीकरण की ओर बढ़ रहा है। आजकल, शिक्षा ऑनलाइन और ऑफलाइन, दोनों रूपों में समानांतर रूप से चल रही है। सब कुछ यूट्यूब, व्याख्यानों के वीडियो आदि में उपलब्ध है। शिक्षक भी ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह से कक्षाएं ले रहे हैं, लेकिन कोविड काल के दौरान इसमें तेज़ी आई और आगे भी यह जारी रहेगा। कोविड काल के दौरान, शिक्षण संस्थान बंद कर दिए गए और शिक्षण के लिए एमएस टीम, ज़ूम आदि जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर स्थानांतरित कर दिए गए। कोचिंग संस्थानों ने भी यही किया। आजकल कोई भी व्यक्ति, चाहे वह कहीं भी हो, ऑनलाइन माध्यम से वास्तविक समय में किसी का भी व्याख्यान प्राप्त कर सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 इन परिवर्तनों का एक प्रमुख प्रेरक है, जिसका उद्देश्य एक अधिक लचीली, बहु-विषयक और विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी शिक्षा प्रणाली बनाना है। इसका उद्देश्य उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) को बढ़ाना, बहु-विषयक शिक्षा को बढ़ावा देना और व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देना है। आधुनिक नौकरी बाजार के लिए प्रासंगिक व्यावहारिक कौशल पर ज़ोर दिया गया है। भारतीय शिक्षा के भविष्य का दृष्टिकोण एक ऐसी प्रणाली बनाना है जो विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी, समावेशी और प्रौद्योगिकी-संचालित हो। इसका ध्यान आजीवन सीखने, अंतःविषयक दृष्टिकोण और छात्रों को नवोन्मेषी और सफल व्यक्ति बनने के लिए तैयार करने पर होगा।

ऊँची सड़क : विकास की राह में एक नई समस्या

श्रीमती रोमा कुमारी
पत्नी- श्री सूरज कुमार, कनिष्ठ अनुवादक

किसी भी देश या समाज के विकास में सड़कों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सड़कें केवल आवागमन का साधन ही नहीं होतीं बल्कि वे आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों को भी गति प्रदान करती हैं। अच्छी सड़कें गाँवों को शहरों से जोड़ती हैं, किसानों को बाजार तक पहुँचने में मदद करती हैं, विद्यार्थियों को शिक्षण संस्थानों तक पहुँचाती हैं और लोगों को स्वास्थ्य सुविधाओं से जोड़ती हैं। इसी कारण आज सरकारें सड़क निर्माण को विकास की प्राथमिकताओं में सबसे ऊपर रखती हैं।

आज देश के दूर-दराज़ के गाँवों तक भी सड़कें पहुँचाई जा रही हैं। जहाँ पहले कच्ची सड़कें हुआ करती थीं, वहाँ अब पक्की सड़कें बनाई जा रही हैं। साथ ही पुरानी सड़कों की मरम्मत और चौड़ीकरण का काम भी तेजी से किया जा रहा है। निस्संदेह यह विकास का एक सकारात्मक संकेत है लेकिन इस प्रक्रिया के साथ एक नई समस्या धीरे-धीरे सामने आ रही है— सड़कों की लगातार बढ़ती ऊँचाई।

आज अनेक गाँवों और छोटे कस्बों में यह स्थिति देखने को मिल रही है कि सड़कें पहले की तुलना में काफी ऊँची हो गई हैं, जबकि आसपास बने घर, दुकानें और अन्य भवन उसी पुराने स्तर पर बने हुए हैं। परिणामस्वरूप जो घर और दुकानें पहले सड़क से ऊँचे या बराबर स्तर पर हुआ करती थीं, वे अब सड़क से नीचे हो गई हैं। यह समस्या अब लोगों के लिए दैनिक जीवन में कई प्रकार की कठिनाइयों का कारण बन रही है।

सड़कों की ऊँचाई बढ़ने का कारण

सड़कों की ऊँचाई बढ़ने का मुख्य कारण निर्माण और मरम्मत की वर्तमान प्रक्रिया है। अधिकतर स्थानों पर जब सड़क की मरम्मत की जाती है तो पुरानी सड़क को पूरी तरह उखाड़कर नई सड़क बनाने के बजाय उसी के ऊपर नई परत डाल दी जाती है। यह परत कभी डामर (कोलतार) की होती है तो कभी कंक्रीट की। जब यह प्रक्रिया बार-बार दोहराई जाती है, तो सड़क की मोटाई बढ़ती जाती है और उसके साथ ही उसकी ऊँचाई भी बढ़ जाती है। समय के साथ यह अंतर इतना बढ़ जाता है कि सड़क, आसपास के घरों और दुकानों से काफी ऊँची दिखाई देने लगती है।

इसके अतिरिक्त कुछ व्यावहारिक कारण भी होते हैं जिनकी वजह से सड़क को ऊँचा बनाया जाता है। कई जगहों पर लोग अपने घरों का गंदा पानी सीधे सड़क पर बहा देते हैं। इससे सड़क पर पानी जमा हो जाता है और सड़क जल्दी खराब होने लगती है। खासकर डामर से बनी सड़कों पर पानी का जमाव बहुत नुकसानदायक

होता है। जब सड़क पर पानी जमा रहता है और उस पर वाहनों का आवागमन होता है तो कोलतार और गिट्टी के बीच की पकड़ कमजोर होने लगती है। धीरे-धीरे गिट्टियाँ उखड़ने लगती हैं और सड़क टूटने लगती है। इसलिए कई बार इंजीनियर सड़क को ऊँचा बनाकर पानी के जमाव को रोकने की कोशिश करते हैं।

इन समस्याओं से बचने के लिए अब सड़क निर्माण में आर.सी.सी. (रीइन्फोर्स्ड सीमेंट कंक्रीट) सड़कों का प्रयोग बढ़ने लगा है। आर.सी.सी. सड़कें सीमेंट, बालू, गिट्टी और लोहे की सरियों से मिलकर बनती हैं। इनकी संरचना मजबूत होती है और इन पर बारिश का प्रभाव अपेक्षाकृत कम पड़ता है। सीमेंट की मजबूत पकड़ और लोहे की सरियों की मजबूती के कारण ये सड़कें लंबे समय तक टिकाऊ रहती हैं। इस प्रकार की सड़कें भारी वाहनों के दबाव को भी आसानी से सहन कर लेती हैं। यही कारण है कि आजकल कई ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में आर.सी.सी. सड़कों का निर्माण तेजी से किया जा रहा है।

हालाँकि इन सड़कों की मोटाई अपेक्षाकृत अधिक होती है। यदि इन्हें पुरानी सड़क के ऊपर बनाया जाए तो सड़क का स्तर पहले से काफी ऊँचा हो जाता है। यही कारण है कि कई कस्बों और गाँवों में सड़कें आसपास के भवनों से काफी ऊँची हो गई हैं।

घरों और भवनों पर प्रभाव

सड़क की ऊँचाई बढ़ने का सबसे अधिक प्रभाव घरों पर पड़ता है। जो घर पहले सड़क से ऊँचे हुआ करते थे, वे अब नीचे दिखाई देने लगे हैं। कई स्थानों पर घरों का स्तर सड़क से दो या तीन फीट तक नीचे हो चुका है। इस स्थिति में बारिश के समय सड़क का पानी आसानी से घरों के अंदर घुसने लगता है। इससे घरों में गंदगी फैलती है और लोगों को काफी परेशानी होती है। कई बार लोगों को अपने घरों की सुरक्षा के लिए अतिरिक्त दीवारें या सीढ़ियाँ बनानी पड़ती हैं।

जिन घरों में दो मंजिलें बनी होती हैं, वहाँ स्थिति और भी विचित्र हो जाती है। कई बार नीचे की मंजिल लगभग भूमिगत जैसी हो जाती है और लोग पहली मंजिल को ही मुख्य प्रवेश तल बना लेते हैं। इस प्रकार घर की मूल संरचना ही बदल जाती है।

वाहन और पार्किंग की समस्याएँ

आजकल छोटे कस्बों और गाँवों में भी लोगों के पास चार पहिया वाहन होने लगे हैं। पहले जब घर और सड़क एक ही स्तर पर होते थे तो लोग अपनी गाड़ी आसानी से घर के सामने या घर के अंदर खड़ी कर लेते थे लेकिन अब जब घर सड़क से नीचे हो गए हैं, तो गाड़ी को घर के अंदर ले जाना मुश्किल हो गया है। इसके लिए लोगों को अपने घर के सामने ढलान बनानी पड़ती है। कई बार घर का कुछ हिस्सा तोड़कर उसे सड़क के स्तर के अनुसार बनाना पड़ता है। यदि ऐसा न किया जाए, तो गाड़ी को सड़क पर ही खड़ा करना पड़ता है। इससे चोरी का खतरा भी बना रहता है और सड़क पर जाम की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है।

दुकानों और स्थानीय व्यापार पर प्रभाव

सड़क की ऊँचाई बढ़ने का प्रभाव केवल घरों तक सीमित नहीं है, बल्कि दुकानों और स्थानीय व्यापार पर भी पड़ रहा है। सड़क किनारे बनी पुरानी दुकानें अब सड़क से काफी नीचे हो गई हैं। जब लोग सड़क पर चलते हैं, तो उन्हें दुकानों के अंदर क्या सामान बिक रहा है, यह स्पष्ट दिखाई नहीं देता। इससे ग्राहकों का

ध्यान दुकानों की ओर कम जाता है। परिणामस्वरूप दुकानदारों के ग्राहक घटने लगते हैं और उनकी आय पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। पहले से ही ऑनलाइन खरीदारी के बढ़ते चलन ने छोटे दुकानदारों की आय को प्रभावित किया है। ऐसे में सड़क की ऊँचाई बढ़ने की समस्या उनके लिए अतिरिक्त कठिनाई बन गई है।

जल निकासी और स्वच्छता की समस्या

सड़क के किनारे नालियाँ बनाई जाती हैं ताकि वर्षा का पानी और गंदा पानी आसानी से बाहर निकल सके लेकिन कई स्थानों पर यह नालियाँ सड़क के स्तर से भी ऊँची बना दी जाती हैं। इस स्थिति में घरों का गंदा पानी नाली तक पहुँच ही नहीं पाता। परिणामस्वरूप पानी घरों के आसपास जमा रहने लगता है। इससे बदबू, गंदगी और बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है।

बरसात के समय स्थिति और भी खराब हो जाती है। पानी न तो नाली में जा पाता है और न ही सड़क पर बह पाता है। परिणामस्वरूप वह घरों के अंदर घुस जाता है और बाढ़ जैसी स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

पुलों और अंडरपास से जुड़ी समस्याएँ

कुछ स्थानों पर सड़क की ऊँचाई बढ़ने के कारण पुलों के नीचे भी समस्या उत्पन्न हो जाती है। पुराने पुलों के नीचे सड़क को ऊँचा नहीं किया जाता, ताकि पुल की ऊँचाई कम न हो लेकिन पुल के दोनों ओर की सड़कें ऊँची कर दी जाती हैं। इससे पुल के नीचे गड्ढा जैसा स्थान बन जाता है। बरसात के समय इस स्थान पर पानी भर जाता है और वह तालाब जैसा दिखाई देने लगता है। जब मोटरसाइकिल या स्कूटर उस पानी से गुजरते हैं, तो कई बार पानी साइलेंसर में घुस जाता है और वाहन बंद हो जाता है।

संभावित समाधान

इस समस्या का समाधान सोच-समझकर सड़क निर्माण करने में ही निहित है। नई सड़क बनाने से पहले पुरानी सड़क को पूरी तरह उखाड़ देना चाहिए और उसी स्तर पर नई सड़क का निर्माण करना चाहिए। इससे सड़क की ऊँचाई अनावश्यक रूप से नहीं बढ़ेगी और आसपास के घरों तथा दुकानों को नीचे नहीं जाना पड़ेगा।

इसके साथ ही जल निकासी की उचित व्यवस्था भी की जानी चाहिए ताकि वर्षा का पानी और घरों का गंदा पानी आसानी से नालियों के माध्यम से बाहर निकल सके। सड़क निर्माण के समय स्थानीय भू-स्तर, घरों की ऊँचाई और भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखना आवश्यक है।

पुरानी सड़क को हटाने से जो कंक्रीट और गिट्टी का मलबा निकलता है, उसका उपयोग गाँवों की कच्ची सड़कों या अन्य निर्माण कार्यों में किया जा सकता है। इससे संसाधनों का पुनः उपयोग होगा और लागत भी कम होगी।

मेरे विचार से सड़कें विकास की प्रतीक हैं और उनका निर्माण अत्यंत आवश्यक है लेकिन विकास की यह प्रक्रिया ऐसी होनी चाहिए जिससे लोगों की समस्याएँ कम हों, न कि बढ़ें। यदि सड़क निर्माण के दौरान स्थानीय परिस्थितियों, लोगों की आवश्यकताओं, घरों की ऊँचाई, जल निकासी की व्यवस्था और भविष्य की संभावनाओं को भी ध्यान रखा जाए तो ऊँची सड़कों की समस्या से बचा जा सकता है जिससे सड़कें वास्तव में विकास की राह को सुगम बना सकेंगी।

बताशा डाक

श्री सूरज कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

पिछली बार जब दुर्गा पूजा के अवसर पर मैं अपने घर गया था तो एक शाम अचानक लाउडस्पीकर से आ रही आवाज़ ने मेरा ध्यान अपनी ओर खींच लिया। गाँव में त्योहार के दिनों में लाउडस्पीकर की आवाज़ कोई असामान्य बात नहीं होती लेकिन उस दिन जो घोषणा हो रही थी, वह कुछ अलग ही थी।

लाउडस्पीकर से बार-बार आवाज़ गूंज रही थी—

"सुनील यादव – बीस हज़ार एक...

लखन साव – बाईस हज़ार एक...

बोलिए... बोलिए... कोई इससे ज़्यादा बोली लगाइए..."

यह आवाज़ सुनते ही मैं समझ गया कि दुर्गा पूजा का पंचमी का दिन है और गाँव के दुर्गा स्थान पर 'बताशा डाक' चल रहा है। हमारे यहाँ दुर्गा पूजा के दौरान बताशा बेचने के अधिकार के लिए नीलामी की जाती है, जिसे स्थानीय भाषा में 'डाक' कहा जाता है।

लाउडस्पीकर की आवाज़ सुनकर मेरी माँ ने कहा, "जाओ न दुर्गा स्थान... वहाँ बताशा का डाक हो रहा है। देखना इस बार डाक कौन लेता है।"

मैंने थोड़ा आलस दिखाते हुए कहा, "जब लाउडस्पीकर से ही घोषणा हो रही है तो वहाँ जाने की क्या ज़रूरत है? जो भी डाक लेगा, उसका नाम यहीं से सुन लेंगे।"

माँ मुस्कुराते हुए बोली, "घर में बैठकर मोबाइल चलाने से कुछ नहीं होगा। बाहर निकलो, लोगों से मिलो-जुलो। थोड़ा हवा भी लगेगी, अच्छा लगेगा।" माँ की बात में अपनापन भी था और एक हल्का सा आदेश भी। इसलिए मैं भी उठकर दुर्गा मंदिर की ओर चल पड़ा।

जब मैं मंदिर के प्रांगण में पहुँचा तो वहाँ पहले से ही काफी भीड़ लगी हुई थी। पूरा माहौल उत्साह से भरा हुआ था। बीच में एक व्यक्ति हाथ में माइक लिए खड़ा था और लगातार बोली की राशि की घोषणा कर रहा था। उसके पास ही एक और व्यक्ति कॉपी और कलम लेकर बैठा था, जो हर नई बोली को लिखकर दर्ज कर रहा था। करीब दस-बारह लोग बोली लगाने वालों के रूप में आगे खड़े थे। हर कोई पिछली बोली से अधिक राशि बोल रहा था। भीड़ में खड़े लोग भी उन्हें उत्साहित कर रहे थे—

"और बढ़ाइए...!"

"इतना तो कुछ भी नहीं है...!"

कभी-कभी तालियाँ भी बज जाती थीं। पूरा वातावरण किसी प्रतियोगिता जैसा लग रहा था।

अब आप सोच रहे होंगे कि यह 'डाक' क्या होता है और 'बोली' किसे कहते हैं? दरअसल, डाक एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें किसी वस्तु या अधिकार को सबसे अधिक कीमत देने वाले व्यक्ति को दिया जाता है। इसे सामान्य भाषा में नीलामी कहा जाता है। हमारे क्षेत्र में इसी नीलामी को स्थानीय भाषा में 'डाक' कहा जाता है। इस प्रक्रिया में जो व्यक्ति जितनी राशि बोलता है, उसे 'बोली लगाना' कहा जाता है। जो सबसे अधिक बोली लगाता है, वही उस वस्तु या अधिकार का मालिक बन जाता है।

अब बात करते हैं 'बताशे' की। बताशा चीनी से बनने वाला एक पारंपरिक मिठाई है, जिसका उपयोग विशेष रूप से पूजा-पाठ में किया जाता है। हमारे गाँव में दुर्गा पूजा के दौरान इसे माँ दुर्गा को चढ़ावे के रूप में अर्पित किया जाता है।

बताशा बनाने की प्रक्रिया भी दिलचस्प होती है। सबसे पहले चीनी को पानी में घोलकर चूल्हे पर गर्म किया जाता है। धीरे-धीरे यह घोल गाढ़ा होकर चाशनी में बदल जाता है। जब चाशनी सही गाढ़ेपन तक पहुँच जाती है, तब उसे बड़े चम्मच से थोड़ा-थोड़ा निकालकर उसमें हल्का सा मैदा मिलाया जाता है। इसके बाद एक छोटी लकड़ी की सहायता से इस मिश्रण को जमीन पर बिछी हुई सफेद सूती चादर या धोती पर बूंद के रूप में गिराया जाता है। यह बूंद थोड़ी फैलकर सिक्के के जैसे गोल आकार की हो जाती है और कुछ देर में जमकर बताशा बन जाती है। मैदा मिलाने का उद्देश्य बताशे को अधिक सफेद और हल्का बनाना होता है। कुछ लोग रंग को और अधिक सफेद करने के लिए सोडियम हाइड्रोसल्फाइट नामक रासायनिक पदार्थ भी मिलाते हैं, जिसे स्थानीय भाषा में 'हाइड्रो' कहा जाता है। जब बताशे पूरी तरह सूख जाते हैं, तब उन्हें चादर से अलग कर डिब्बों में भरकर रख लिया जाता है।

बताशा केवल पूजा में ही नहीं, बल्कि कुछ आयुर्वेदिक उपचार में भी इसका उपयोग किया जाता है। बताशा में कार्बोहाइड्रेट और ग्लूकोज भरपूर मात्रा में पाया जाता है जो तुरंत एनर्जी देता है और गर्मियों में शरीर को ठंडक प्रदान करता है। यह एंटीऑक्सीडेंट गुणों से भी भरपूर होता है, जो कई बीमारियों से बचा सकता है। अगर देशी घी में बताशा मिलाकर खाया जाए तो ये मेटाबॉलिज्म को बढ़ाने का काम करते हैं। इससे पाचन दुरुस्त होता है, एसिडिटी, कब्ज की समस्या को दूर करने में मदद मिलती है। इसमें कैल्शियम और फास्फोरस की अच्छी मात्रा होती है, जो हड्डियों के स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद है। रात में गर्म दूध में बताशा मिलाकर पीने से गले की खराश, सर्दी और बलगम भी कम होता है। सुबह खाली पेट एक बताशे में 2 बूंद ताजा बरगद का दूध डालकर खाने से त्वचा संबंधी रोग जैसे दाने, फोड़े-फुंसी, एलर्जी और खुजली आदि में आराम मिल सकता है।

बताशा एक ऐसा मीठा प्रसाद है जो अपने अंदर कोई धार्मिक भेदभाव नहीं रखता। चवन्नी या रुपए के आकार के इस मीठे की जड़ें मुगल काल से जुड़ी हैं। बताशे से जुड़ी मुगल काल की एक खूबसूरत प्रेम कहानी है। मुगल सम्राट के समय एक बाजार लगता था जिसे मीना बाजार कहते। वो बाजार आज भी दिल्ली में लगता है। मीना बाजार में नवरोज का जश्न मानाया जा रहा था। जश्न में जहांगीर भी शामिल हुए। वहाँ उनकी मुलाकात नूरजहां से हुई। पहली नजर में जहांगीर नूरजहां के दीवाने हो गए, क्योंकि उस वक्त नूरजहां का मुंह बताशे से भरा हुआ था। नूरजहां की इसी अदा पर जहांगीर फिदा हो गए।

दुर्गा पूजा के दौरान बताशा बेचने का अधिकार दुर्गा पूजा समिति द्वारा नीलामी/डाक के माध्यम से दिया जाता है। जिस व्यक्ति की बोली सबसे अधिक होती है, मंदिर के गेट के बाहर या समिति द्वारा निर्धारित क्षेत्र में बताशा बेचने का एकाधिकार मिल जाता है। उस क्षेत्र में कोई अन्य दुकानदार बताशा नहीं बेच सकता है। अगर कोई दूसरा व्यक्ति वहाँ बताशा बेचते हुए पकड़ा जाता है तो दुर्गा पूजा समिति उस पर जुर्माना भी लगा सकती है। डाक/नीलामी से जो धन प्राप्त होता है, उसे दुर्गा पूजा के आयोजन और मंदिर के विकास कार्यों में लगाया जाता है।

बताशा डाक की प्रक्रिया दुर्गा पूजा के 'पंचमी' के दिन आयोजित की जाती है। इसका कारण यह है कि 'सप्तमी' के दिन से दुर्गा माँ के प्रतिमा के पट खुल जाते हैं। उस दिन से दुर्गा माता के आम दर्शन के लिए मंदिर के द्वार खोल दिए जाते हैं, जिससे श्रद्धालुओं की भीड़ बढ़ने लगती है। उसी दिन से बताशे की बिक्री भी शुरू हो जाती है, जो विजयादशमी तक चलती रहती है। चूंकि बताशा तैयार करने में लगभग एक

दिन का समय लगता है, इसलिए षष्ठी के दिन तैयारी करने के लिए समय देने हेतु नीलामी/डाक पंचमी को ही कर ली जाती है।

हमारे यहाँ दुर्गा पूजा में डाक/नीलामी की प्रक्रिया का निम्न रूप से होती है:-

• डाक की प्रक्रिया शुरू होने से पहले बोली लगाने वाले लोगों का रजिस्ट्रेशन किया जाता है। इसके लिए लगभग 2000 रुपये की राशि जमा करनी पड़ती है, जिसे जमानत राशि कहा जाता है। केवल वही लोग बोली लगा सकते हैं जिन्होंने पहले से अपना रजिस्ट्रेशन कराया हो।

• डाक समाप्त होने के बाद सबसे अधिक बोली लगाने वाले व्यक्ति को छोड़कर बाकी सभी लोगों की जमानत राशि वापस कर दी जाती है।

• जिस व्यक्ति की बोली सबसे अधिक होती है, उसे षष्ठी पूजा के दिन कुल बोली राशि का 50 प्रतिशत दुर्गा पूजा समिति के पास जमा करना पड़ता है।

• यदि वह व्यक्ति किसी कारणवश डाक नहीं लेना चाहता या निर्धारित समय पर राशि जमा नहीं कर पाता, तो उसकी जमानत राशि जब्त कर ली जाती है और डाक को फिर से आयोजित किया जाता है।

'बताशा डाक' की प्रक्रिया बहुत ही रोचक और रोमांचक होती है। इसमें आसपास के गाँवों के स्थानीय लोग ही बोली लगाते हैं। नीलामी की शुरुआत एक न्यूनतम राशि से की जाती है। कहीं यह राशि पाँच हजार रुपए से शुरू होती है तो कहीं दस हजार से।

कई बार बोली की राशि बढ़ाने के लिए दुर्गा पूजा समिति के कुछ लोग भी रजिस्ट्रेशन करवा लेते हैं और ऊँची बोली लगाते हैं। उन्हें देखकर अन्य लोगों में भी प्रतिस्पर्धा की भावना बढ़ जाती है और वे भी अधिक राशि बोलने लगते हैं। कभी-कभी इस प्रक्रिया में वर्चस्व की लड़ाई भी दिखाई देने लगती है। चूँकि बोली लगाने वाले अधिकांश लोग एक-दूसरे को अच्छी तरह जानते हैं, इसलिए कई बार प्रतिष्ठा और अहम की वजह से लोग अनुमानित लाभ से भी अधिक राशि बोल देते हैं। इससे अप्रत्यक्ष रूप से पूजा समिति को ही फायदा होता है।

बताशा डाक दरअसल एक अनुमान आधारित व्यापार है। अगर किसी वर्ष बारिश अधिक हो जाए या कोई प्राकृतिक आपदा आ जाए तो श्रद्धालुओं की संख्या कम हो जाती है और दुकानदार की बिक्री भी घट जाती है लेकिन उसे फिर भी समिति को तय की गई राशि देनी ही पड़ती है। ऐसे में उसे घाटा भी उठाना पड़ सकता है।

बताशा डाक की यह परंपरा मंदिर बनने के समय से ही चली आ रही है। इस व्यवस्था से दुर्गा पूजा के आयोजन में होने वाले खर्च का एक बड़ा हिस्सा निकल आता है। कई बार कुछ धन बच भी जाता है, जिसका उपयोग मंदिर के भवन और अन्य विकास कार्यों में किया जाता है। इस तरह 'बताशा डाक' केवल एक व्यापारिक प्रक्रिया ही नहीं है बल्कि यह हमारे गाँव की सांस्कृतिक परंपरा, सामाजिक प्रतिस्पर्धा और धार्मिक आस्था का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

लेखापरीक्षा के क्षेत्र में AI और मशीन लर्निंग

श्री शरत चंद्र महारणा
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी

लेखापरीक्षा पारंपरिक रूप से वित्तीय जानकारी की सटीकता और विश्वसनीयता का आकलन करने के लिए मैनुअल प्रक्रियाओं, प्रोफेशनल निर्णयों और सांख्यिकीय नमूना चयन पर निर्भर रहा है। हालांकि, तकनीक में तेज़ी से हुई तरक्की ने इस क्षेत्र को काफी हद तक बदल दिया है। सबसे ज़्यादा असरदार नवीन संकल्पनाओं में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और मशीन लर्निंग (ML) शामिल हैं, जो लेखापरीक्षा की योजना बनाने, उन्हें लागू करने के तरीके को बदल रहे हैं। ये तकनीक लेखापरीक्षा की गुणवत्ता, दक्षता और प्रभावशीलता को बढ़ाती हैं, साथ ही लेखापरीक्षक को तेज़ी से जटिल होते कारोबारी माहौल का सामना करने में भी मदद करती हैं।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का मतलब ऐसे कंप्यूटर सिस्टम हैं जिन्हें ऐसे काम करने के लिए डिज़ाइन किया गया है जिनके लिए आमतौर पर इंसानी दिमाग की ज़रूरत होती है, जैसे कि तर्क करना, पैटर्न पहचानना और फ़ैसले लेना। मशीन लर्निंग, जो AI का ही एक हिस्सा है, में ऐसे एल्गोरिदम शामिल होते हैं जो सिस्टम को डेटा से सीखने, पैटर्न पहचानने और बिना किसी खास प्रोग्रामिंग में समय के साथ परफॉर्मेंस बेहतर बनाने में मदद करते हैं। लेखापरीक्षा में, AI और ML का इस्तेमाल बड़ी मात्रा में स्ट्रक्चर्ड और अनस्ट्रक्चर्ड डेटा का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है, जिसकी तेजी और सटीकता इंसानी क्षमताओं से कहीं ज़्यादा होती है।

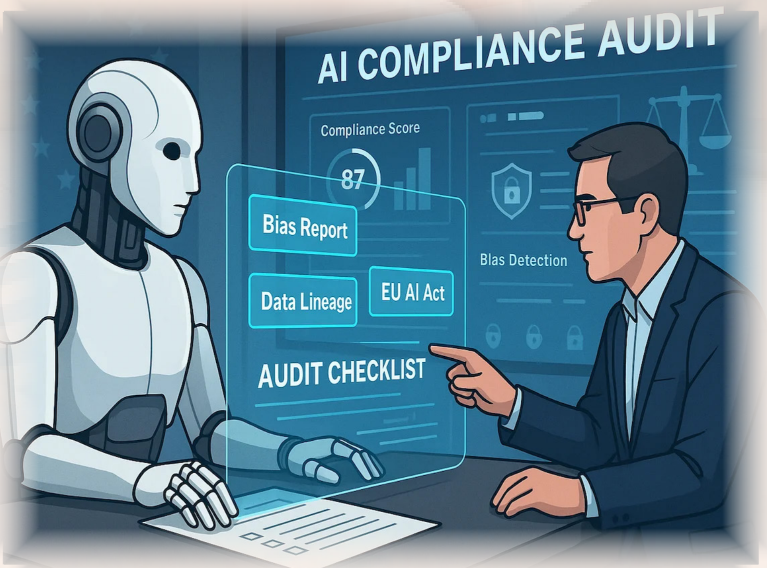

लेखापरीक्षा में AI और ML के सबसे ज़रूरी इस्तेमाल में से एक डेटा विश्लेषण और गड़बड़ी का पता लगाना है। समय और संसाधन की

कमी के कारण पारंपरिक लेखापरीक्षक अक्सर नमूना चयन तकनीक पर निर्भर करते हैं। हालांकि, AI-पावर्ड सिस्टम नमूने के बजाय पूरे डेटासेट का विश्लेषण कर सकते हैं, जिससे लेखापरीक्षक असामान्य ट्रांजैक्शन, आउटलायर या ऐसे पैटर्न की पहचान कर पाते हैं जो गलतियों या धोखाधड़ी का संकेत देते हैं। मशीन लर्निंग मॉडल पिछले लेखापरीक्षा डेटा और जाने-माने धोखाधड़ी के मामलों से सीखकर हाई-जोखिम वाले ट्रांजैक्शन को फ़्लैग कर सकते हैं, जिससे जोखिम असेसमेंट की सटीकता में सुधार होता है।

AI और ML धोखाधड़ी का पता लगाने और उसे रोकने में भी अहम भूमिका निभाते हैं। फाइनेंशियल ट्रांजैक्शन की लगातार निगरानी करके, ये टेक्नोलॉजी रियल टाइम में संदिग्ध गतिविधियों का पता लगा सकती हैं। उदाहरण के लिए, ML एल्गोरिदम सामान्य ट्रांजैक्शन व्यवहार से विचलन की पहचान कर सकते हैं, डुप्लीकेट पेमेंट को पहचान सकते हैं, या जटिल धोखाधड़ी योजनाओं का पता लगा सकते हैं, जो मैनुअल रिव्यू के दौरान नज़रअंदाज़ हो सकते हैं। यह प्रोएक्टिव तरीका संगठनों को वित्तीय नुकसान को कम करने और आंतरिक नियंत्रण को मज़बूत करने में मदद करता है। पाइथन, IDEA, डीप लर्निंग जैसे डेटा एनालिटिक्स टूल्स और Power BI, Orange जैसे डेटा विज़ुअलाइज़ेशन टूल्स, बेस रिकॉर्ड के साथ रिकॉर्ड की ठीक से जांच करने के बाद लेखापरीक्षा निष्कर्ष बनाने में असरदार हो सकते हैं।

एप्लीकेशन का एक और महत्वपूर्ण क्षेत्र है- लेखापरीक्षा योजना और जोखिम आकलन। AI टूल्स क्लाइंट के फाइनेंशियल डेटा, इंडस्ट्री ट्रेंड्स, पिछले लेखापरीक्षा के नतीजों और बाहरी जानकारी का मूल्यांकन करके इनहेरेंट और कंट्रोल जोखिम का ज़्यादा असरदार तरीके से आकलन कर सकते हैं। इससे लेखापरीक्षक ज़्यादा जोखिम वाले क्षेत्रों पर ध्यान दे पाते हैं, जिससे लेखापरीक्षा की क्षमता बेहतर होती है और संसाधनों का ज़्यादा रणनीतिक बंटवारा हो पाता है।

कई फायदों के बावजूद, लेखापरीक्षा में AI और ML के इस्तेमाल से कुछ चुनौतियाँ और सीमाएँ भी सामने आती हैं। इनमें डेटा प्राइवेसी की चिंताएँ, साइबर सुरक्षा जोखिम, एल्गोरिदम में पक्षपात और जटिल मशीन लर्निंग मॉडल में पारदर्शिता की कमी शामिल हैं। इसके अलावा, लेखापरीक्षकों को एडवांस्ड टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करते समय लेखापरीक्षा मानकों और नियामक ज़रूरतों का पालन भी सुनिश्चित करना होगा।

कालीजाई मंदिर की कहानी

सुश्री श्रद्धा राउत
सुपुत्री- श्री पूर्ण चंद्र राउत, लेखापरीक्षक

चिलिका झील ओडिशा की सबसे सुंदर और खास जगहों में से एक है। यह एशिया की सबसे बड़ी खारे पानी की झील है। यहाँ का पानी हमेशा बदलता रहता है- कभी शांत, तो कभी लहरों से भरा हुआ। चिलिका में बहुत सारे रंग-बिरंगे पक्षी दिखाई देते हैं, खासकर सर्दियों में जब दूर देश से प्रवासी पक्षी यहाँ आते हैं। मछुआरों की छोटी नाव, खुले आसमान के नीचे फैला पानी और ठंडी हवा सब मिलकर इस जगह को बहुत ही खास बना देते हैं। लेकिन चिलिका सिर्फ अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए नहीं बल्कि अपनी एक भावुक और आस्था से जुड़ी कहानी के लिए भी जानी जाती है। यह कहानी कालीजाई मंदिर से जुड़ी है, जिसपर लोग बहुत आस्था रखते हैं।

कहते हैं कि बहुत साल पहले एक नई दुल्हन अपने पति और परिवार के साथ नाव में बैठकर चिलिका झील पार कर रही थी। वह अपनी शादी के बाद पहली बार ससुराल जा रही थी, इसलिए उसके मन में थोड़ी खुशी और थोड़ी घबराहट भी थी। रास्ते में अचानक तेज आँधी आ गई। हवा तेज चलने लगी, लहरें ऊंची होने लगी और नाव हिलने लगीं। चारों तरफ डर का माहौल हो गया। उसे मुश्किल समय में दुल्हन ने माँ शक्ति से प्रार्थना की कि सब लोग सुरक्षित रहें। लेकिन दुर्भाग्य से वह झील के पानी में डूब गई। बाद में लोगों को ऐसा महसूस हुआ कि उस दुल्हन की आत्मा देवी शक्ति बन गई और वही आगे चलकर माँ कालीजाई के नाम से जानी जाने लगी। जिस जगह यह घटना हुई थी वहीं झील के बीच एक छोटे से द्वीप पर कालीजाई मंदिर बनाया गया।

आज भी चिलिका झील में मछुआरे और नाविक सफर शुरू करने से पहले मां कालीजाई का नाम लेते हैं। उन्हें विश्वास है की माँ उनकी नाव को सही रास्ता दिखाती हैं और हर मुश्किल से बचाती हैं। इस तरह चिलिका झील सिर्फ पानी और पक्षियों की जगह नहीं है बल्कि यह आस्था विश्वास और भावनाओं से जुड़ी एक जीवित कहानी भी है जो हर आने वाले को कुछ ना कुछ महसूस कराती है।

बिना शोर के बदलाव

सुश्री स्वागतिका साहू
सुपुत्री- श्री गणेश्वर साहू, लेखापरीक्षक

शाम धीरे-धीरे गाँव की पगडंडियों पर उतर रहा था। पीपल के पेड़ के नीचे बैठा हुआ आदमी दूर क्षितिज की ओर देख रहा था, जैसे किसी उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा हो। उसका नाम रवि था- एक साधारण नाम, पर भीतर असाधारण प्रश्नों का बोझ लिए। गाँव के लोग उसे जानते थे पर समझते नहीं थे। वह उन लोगों में से था जो भीड़ में रहकर भी अकेले होते हैं।

रवि के पिता कभी इस गाँव के सम्मानित शिक्षक थे। ईमानदारी, अनुशासन और ज्ञान तीनों उनके जीवन का मूल मंत्र था लेकिन ईमानदारी की कीमत अक्सर भारी होती है। एक झूठे आरोप में उन्हें नौकरी से निकाल दिया और उसी के साथ उनके आत्म सम्मान ने भी दम तोड़ दिया। कुछ ही वर्षों में वे संसार छोड़ गए। रवि उस समय मात्र बारह साल का था पर उस उम्र में ही उसने देख लिया था कि समाज कितना निष्ठुर हो सकता है। माँ ने सिलाई करके खेतों में काम करके और रातों को रोते हुए भी दिन में मुस्कुराकर किसी तरह घर संभाला। रवि ने पढ़ाई नहीं छोड़ी। किताबें उसके लिए केवल अक्षरों का समूह नहीं था बल्कि वे खिड़कियाँ थी- एक ऐसी दुनिया की ओर जहाँ न्याय संभव था।

समय बीतता गया। रवि अपने कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने शहर गया। वहाँ उसकी मुलाकात अन्वेषा से हुई। अन्वेषा दर्शनशास्त्र की छात्रा थी- गंभीर, संवेदनशील और प्रश्नों से भरी हुई। दोनों की पहली बातचीत एक पुस्तकालय में हुई थी, जहाँ मौन ने शब्दों से पहले मित्रता कराई।

अन्वेषा को रवि की आँखों में एक खालीपन दिखता था, जैसे कोई कहानी अधूरी हो और रवि को अन्वेषा में वह साहस दिखता था, जो प्रश्न पूछने से नहीं डरता। दोनों धीरे-धीरे एक-दूसरे के निकट आए पर यह निकटता प्रेम की सहज धारा में नहीं बही। इसमें विचारों की टकराहट, जीवन के प्रति भिन्न दृष्टिकोण और भविष्य को लेकर अनिश्चय शामिल था।

रवि समाज को बदलना चाहता था। वह मानता था कि शिक्षा ही एकमात्र मार्ग है। अन्वेषा का विश्वास था कि जब तक मनुष्य के भीतर परिवर्तन नहीं होगा, बाहरी परिवर्तन खोखले रहेंगे। दोनों सही थे और दोनों अधूरे भी।

कॉलेज के बाद रवि ने एक सरकारी नौकरी की तैयारी शुरू की परंतु उसका मन उसमें नहीं लगता था।

भीतर कहीं एक आवाज थी, जो उसे गाँव की ओर खींच रही थी- उसी गाँव की ओर जहाँ उसके पिता अपमानित हुए थे। वहीं कुछ बदलने की इच्छा उसके भीतर ज्वाला बनकर जलने लगी।

अन्वेषा शहर में ही रह गई। उसने शोध का मार्ग चुना। दोनों के बीच पत्र आते-जाते रहे पर शब्दों में अब वह ऊष्मा नहीं रही। समय ने दूरी बढ़ा दी थी और समझ भी। गाँव लौटकर रवि ने एक छोटा सा विद्यालय शुरू किया। लोग हँसे- "कौन पढ़ेगा? गरीबों के बच्चे....?" पर रवि रुका नहीं। वह जानता था कि परिवर्तन तुरंत नहीं आता। पहले विश्वास आता है, फिर परिणाम।

धीरे-धीरे बच्चे आने लगे। माएँ भरोसा करने लगी और पिता- जो कभी व्यवस्था से टूट चुके थे अब अपने बच्चों की आँखों में भविष्य देखने लगे। एक दिन बरसों बाद अन्वेषा गाँव आई। दोनों आमने-सामने थे- बदले हुए पर वही। बातचीत में कोई शिकायत नहीं थी, बस स्वीकार्यता थी। उन्होंने समझ लिया कि प्रेम का अर्थ साथ रहना ही नहीं होता, कभी-कभी एक दूसरे को अपने-अपने रास्ते पर जाने देना भी प्रेम होता है। अन्वेषा ने विद्यालय देखा। बच्चों की आँखों में चमक थी। उसने रवि की ओर देखा अब उसकी आँखों में खालीपन नहीं था, बल्कि शांति थी।

समय के साथ विद्यालय एक आंदोलन बन गया। रवि प्रसिद्ध नहीं हुआ पर प्रभावशाली अवश्य हुआ। वह भाषण नहीं देता था, उदाहरण बनता था।

कई वर्षों बाद उसी पीपल के पेड़ के नीचे रवि फिर बैठा था। पीपल के पेड़ की छाया अब पहले जैसे नहीं रही थी। समय ने उसकी जड़ों को और गहरा कर दिया था- जैसे रवि की चेतना को। गाँव अब भी वही था- कच्चे घर, धूल भरी सड़कें, कुएं के पास बैठी स्त्रियाँ और शाम को लौटते पशु, पर रवि जानता था कि भीतर कुछ बदल चुका है। बदलाव अक्सर शोर नहीं करता वह चुपचाप अपना काम करता है।

विद्यालय को पाँच साल हो चुके थे। अब वह केवल एक कच्चा कमरा नहीं था। मिट्टी की दीवारों पर चूना चढ़ चुका था, छत पर खपरैल की जगह टिन लगी थी और आंगन में नीम का एक छोटा पौधा लगाया गया था- भविष्य के लिए। बच्चे सुबह समय पर आते, कतार में बैठते और रवि की आँखों में झाँककर पढ़ते। वह केवल अक्षर नहीं सिखाता था; वह उन्हें मनुष्य बनना सिखा रहा था। गाँव में कुछ लोग अब भी उसे संशय की दृष्टि से देखते थे। उन्हें डर था- पढ़ा-लिखा आदमी सवाल पूछता है और सवाल व्यवस्था को असहज कर देते हैं। प्रधान को यह विद्यालय कभी पसंद नहीं आया। उसे लगता था कि रवि उसकी सत्ता के लिए खतरा है। शिक्षा धीरे-धीरे डर पैदा करने लगी थी।

एक दिन सरकारी अधिकारी गाँव आए। निरीक्षण था। बच्चों से सवाल पूछे गए। उत्तर सही थे पर अधिक महत्वपूर्ण बात यह थी कि बच्चों की आँखों में डर नहीं था। वे सोच रहे थे, समझ रहे थे। इस बात से अधिकारी प्रभावित हुए। उन्होंने सहायता का आश्वासन दिया। यही वह क्षण था जब विरोध खुलकर सामने आया।

रात को विद्यालय की दीवार पर कालिख पोत दी गई। दरवाजा तोड़ दिया गया। किताबें बिखेर दी गई। सुबह जब रवि पहुँचा तो वह कुछ क्षण खड़ा रहा। भीतर क्रोध था पर उससे बड़ा था- धैर्य। उसने बच्चों को इकट्ठा किया, दीवार साफ करवाई और पढ़ाई शुरू कर दी- जैसे कुछ हुआ ही न हो।

उसी दिन उसे अन्वेषा का पत्र मिला। अन्वेषा अब एक जानी-मानी लेखिका बन चुकी थी। उसके लेखों में संवेदना थी और उसकी भाषा में साहस। उसने रवि के विद्यालय के बारे में सुना था- किसी रिपोर्ट में। उसे विश्वास नहीं हुआ था कि वह आदमी इतने वर्षों तक बिना रुके, बिना शोर किए, यह सब करता रहा। पत्र में कोई भावुकता नहीं थी, केवल सम्मान था। उसने लिखा था कि वह कुछ समय के लिए गाँव आना चाहती है- देखना चाहती है, समझना चाहती है। अन्वेषा के आने से गाँव में हलचल हुई। लोग फुसफुसाए- "शहर की बड़ी लेखिका आई है।" पर अन्वेषा ने न तो विशेष व्यवहार चाहा, न अलग सम्मान। वह बच्चों के बीच जमीन पर धूल में बैठी । उसने उनकी कहानियाँ सुनीं- भूख की, सपनों की, डर की।

रात को वह और रवि बहुत देर तक बातें करते रहे। पुराने प्रश्न फिर जीवित हुए पर अब उनमें टकराव नहीं था। दोनों समझ चुके थे कि जीवन किसी एक उत्तर का नाम नहीं है।

अन्वेषा ने कहा, "तुमने बाहर की दुनिया बदलनी शुरू कर दी है।" रवि ने उत्तर दिया, "और तुमने भीतर की।" दोनों मुस्कुराए। यह मुस्कान अधूरे प्रेम की नहीं थी, बल्कि पूर्ण समझ की थी।

अन्वेषा ने गाँव, विद्यालय और रवि पर एक लंबा लेख लिखा। वह लेख शहरों तक पहुँचा, लोग आने लगे- कुछ मदद करने, कुछ देखने, कुछ केवल तस्वीर खिंचवाने। रवि ने सबको स्वीकार किया, पर किसी पर निर्भर नहीं हुआ। वह जानता था- यदि उद्देश्य शुद्ध हो, तो साधन स्वयं रास्ता बना लेते हैं। एक दिन प्रधान ने खुला विरोध किया। झूठे आरोप लगाए गए। फिर वही इतिहास दोहराने की कोशिश हुई जैसे रवि के पिता के साथ हुआ था पर इस बार रवि अकेला नहीं था, गाँव के लोग उसके साथ खड़े हुए। वे अब समझ चुके थे।

सच जीत गया। नहीं, सच हमेशा नहीं जीतता पर इस बार जीत गया। वर्ष बीते, रवि बूढ़ा होने लगा, बाल सफेद हो गए पर उसकी आँखों में थकान नहीं थी। विद्यालय अब एक संस्था बन चुका था। कई शिक्षक थे। बच्चे आगे पढ़ने के लिए शहर जा रहे थे।

एक शाम रवि फिर पीपल के पेड़ के नीचे बैठा था। पास में वही नीम का पेड़ अब बड़ा हो चुका था। हवा में पत्तों की सरसराहट थी। उसने पीछे मुड़कर जीवन को देखा- पिता का अपमान, माँ का संघर्ष, अन्वेषा का साथ और अलगाव, गाँव का अविश्वास और फिर विश्वास। सब कुछ एक मौन की तरह था- गहरा, स्थिर, अर्थपूर्ण।

रवि ने आंखें बंद कीं। अब उसे किसी उत्तर की प्रतीक्षा नहीं थी क्योंकि उसने समझ लिया था- जीवन का अर्थ खोजने की नहीं, उसे जीने की प्रक्रिया है और जो मन को समझ ले, वह शोर से मुक्त हो जाता है।

आपके पत्र

भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय (केन्द्रीय), मुंबई
O/o the PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT (CENTRAL), MUMBAI
C-25, Audit Bhavan, Bandra Kurla Complex, Mumbai- 400 051
e-mail – pdacentralmumbai@cag.gov.in

सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सं.प्र.नि.ले.प.(कें.)/रा.भा.अ./पत्रिका समीक्षा/I/1215510/2025 दिनांक 01-12-2025

सेवा में,
सहायक निदेशक/राजभाषा
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, रेल सदन भुवनेश्वर

विषयः कार्यालयीन पत्रिका "धर्मपद" के 14वें अंक की समीक्षा संबंधी।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका "धर्मपद" का 14वां अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद। इस अंक के आवरण पृष्ठ, साज-सज्जा एवं अन्य कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र मनोरम एवं आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, मनमोहक एवं रोचक है।

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया

SUMITH S

सहायक निदेशक/राजभाषा

जावक सं.45/3.2.26

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
ऑडिट भवन, रेसकोर्स रोड
गुजरात, राजकोट – 360 001

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

INDIAN AUDIT AND ACCOUNT DEPARTMENT
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I)
AUDIT BHAVAN, RACECOURSE ROAD
GUJARAT, RAJKOT - 360001

संख्याः- हिंदी कक्ष/पत्रिका प्रशंसा-पत्र/2024-ओनवार्ड्स/23 दिनांकः- 02.02.2026

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय,
पूर्व तट रेलवे, ओड़िशा
भुवनेश्वर – 751017

विषयः-हिंदी गृह पत्रिका "धर्मपद" के 14 वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका "**धर्मपद**" के 14 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं। विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ उल्लेखनीय एवं अत्यधिक प्रशंसनीय है : –

क्र.सं	रचनाकार	रचनाएँ
1.	श्री चन्दन कुमार	आरंभ या अंत
2.	डी. सुधा कल्याणी	सुंदरता ही चरित्र है
3.	मिन्टू हलदार	तृप्ति
4.	श्रद्धा राउत	वो जो लौटकर नहीं आया
5.	सूरज कुमार	इन्स्टालेशन

गृह हिंदी पत्रिका कार्यालय की साहित्यिक प्रतिभा को निखारने में एक सशक्त मंच प्रदान करता है। यह इसी प्रकार से राजभाषा हिंदी की प्रगति में अपना अमूल्य योगदान देता रहे, पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्जवल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारो एवं संपादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

संजय कुमार

सहायक निदेशक (राजभाषा)

महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय
केरल, तिरुवनंतपुरम - 695 001

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

OFFICE OF THE
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-II)
KERALA, THIRUVANANTHAPURAM - 695 001

सं.लेप.II/हिंदी कक्ष/ पत्रिका/2025-26 दिनांक :17-11-2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान निदेशक (लेखापरीक्षा),
पूर्व तट रेलवे, उत्तर खंड
भुवनेश्वर

विषयः- पत्रिका की पावती – बाबत्

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित छमाही राजभाषा पत्रिका"धर्मपद" के 14वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहस्त्र धन्यवाद । पत्रिका में समाहित सामग्री ज्ञानवर्धक एवं सराहनीय है । सार्थक सामग्री के चयन हेतु बधाई ।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रोचक, मनोरंजक एवं लाभप्रद हैं, विशेषकर, श्री चंदन कुमार द्वारा रचित 'आरंभ या अंत?', श्रीमती डी सुधा कल्याणी द्वारा रचित'सुंदरता ही चरित्र है, तथा श्री मिन्टु हालदार द्वारा रचित 'तृप्ति' अत्यंत सराहनीय हैं । पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को बधाई एवं शुभकामनाएँ ।

भवदीया
Digitally signed by
A M Bhadrambika
Date: 17-11-2025
11:22:10
सहायक निदेशक (राजभाषा)

दूरभाष / Telephone :0471 – 2330899 ई-मेल / e-mail : agaukerala2@cag.gov.in फैक्स / Fax – 0471-2332022
वेबसाइट / Website : https://cag.gov.in/ag2/kerala/en

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा–I) तमिलनाडु
आडिट भवन,
361, अण्णा सालै, तेनाम्पेट,
चेन्नै–600 018.

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I)
TAMIL NADU
AUDIT BHAVAN,
361, ANNA SALAI, TEYNAMPET,
CHENNAI – 600 018.

सं. प्र.मले. (लेप-I)/हिं.अनु./प्रशं.पत्र/14-02/2025-26/ 41 दिनांक:04-12-2025

सेवा में

सहायक निदेशक (राजभाषा),
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे,रेल सदन
भुवनेश्वर – 751017 (ओडिशा)

महोदय,

विषय: हिंदी पत्रिका "धर्मपद" के 14वें अंक पर अभिमत ।

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "**धर्मपद**" के 14वें अंक की प्रति सादर प्राप्त हुई। धन्यवाद। राजभाषा हिन्दी की विकास यात्रा में पत्रिका के माध्यम से रचनाकारों की भावनाओं एवं विचारों को शब्दों की माला में पिरोकर दूसरों तक पहुंचाने का प्रयास सच में प्रशंसनीय है। पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं संग्रहणीय हैं । पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है । रचनाएं-'भारतीय संस्कृति', 'सुंदरता ही चरित्र है', 'AI से समाचार सूचना में प्रभाव', 'साथी' , 'जिज्ञासु लड़की' एवं 'वो जो लौटकर नहीं आया' विशेष रूप से सराहनीय हैं। सभी रचनाकारों का प्रयास सराहनीय हैं। पत्रिका के निरंतर प्रकाशन एवं उज्वल भविष्य की कामना के साथ पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

सधन्यवाद!!

भवदीया,
Digitally signed by
Shibi T Manjooran
Date: 04-12-2025
12:10:53
षिबी टी. मांजूरान
सहायक निदेशक (राजभाषा)

दूरभाष/Phone: 044 -2431 6400 फैक्स /Fax: 044 – 2433 0012 तार /Email: agautamilnadu1@cag.gov.in

आपके पत्र

महालेखाकार (लेखापरीक्षा) का कार्यालय
सिक्किम, लेखापरीक्षा भवन, देवराली
गान्तोक 737 102

Office of the Accountant General
(Audit), Sikkim, Lekha Pariksha
Bhawan, Deorali, Gangtok- 737 102

संख्या: Admn(Audit)/Publicationsofotheroffices/2022-23/425
दिनांक: 12 NOV 2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा),
राजभाषा अनुभाग,
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय,
पूर्व तट रेलवे, रेल सदन,
भुवनेश्वर – 751017 (ओड़िसा)

विषय: हिंदी पत्रिका "धर्मपद" के 14वें अंक की ई-प्रति की पावती के सम्बन्ध में |

महोदय/महोदया,

हम आपके कार्यालय द्वारा भेजी गई हिंदी पत्रिका "धर्मपद" के 14वें अंक की ई-प्रति के लिए आभार और प्रशंसा व्यक्त करते हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा सुंदर और आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख अत्यंत रोचक, प्रशंसनीय और ज्ञानवर्धक हैं। विविध लेख पत्रिका को और भी रोचक बनाते हैं। कुछ लेख अत्यंत प्रेरक, कुछ विचारोत्तेजक और हल्के फुल्के हैं |

हम कामना करते हैं कि आपकी पत्रिका निरंतर विकसित होती रहे और इसकी गुणवत्ता प्रतिदिन नई ऊँचाइयों को छुए।

एक बार पुनः धन्यवाद एवं शुभकामनाएँ |

यह पत्र सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन से जारी किया जाता है |

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन

Phone: (03592) 280614 E-mail: agausikkim@cag.gov.in

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब,
चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB,
CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email-agaupunjab@cag.gov.in

सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

क्रमांक-रा.अ./हिंदीपत्रिकासमीक्षा/2025-26/I/1210466/2025 दिनांक:25-11-2025

सेवा में

निदेशक
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा,
पूर्व तट रेलवे, भुवनेश्वर-751017

विषय:- हिंदी पत्रिका 'धर्मपद' के 14वें अंक की समीक्षा।

महोदय,

आपके कार्यालय से प्रकाशित पत्रिका "धर्मपद" के 14वेंअंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, पत्रिका हेतु सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। श्री अरबिन्द शतपथी की "AI से समाचार सूचना में प्रभाव", श्री मानस रंजन जेना की "सिमलीपाल की यात्रा", श्री मिन्टू हालदार की "तृप्ति", श्री निरंजन परिडा की "जिज्ञासु लड़की", सुश्री श्रद्धा राउत की "वो जो लौटकर नहीं आया" एवं श्री सूरज कुमार की "इंस्टालेशन" आदि रचनाएँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुंदर प्रस्तुतिकरण अत्यंत प्रशंसनीय है। राजभाषा हिंदी की सृजनशीलता के उत्थान एवं कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं

भवदीया

EKTA
सहायक निदेशक (राजभाषा)

ಮಹಾಲೇಖಪಾಲರು (ಲೆ. ಮತ್ತು ಹ.) ಕಛೇರಿ, ಕರ್ನಾಟಕ, ಬೆಂಗಳೂರು
ಭಾರತೀಯ ಲೆಕ್ಕಪರಿಶೋಧನೆ ಮತ್ತು ಲೆಕ್ಕಪತ್ರ ಇಲಾಖೆ
महालेखाकार (लेखा एवं हक) का कार्यालय, कर्नाटक,
भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
Office of the Accountant General (A & E), Karnataka
Indian Audit & Accounts Department

सत्यमेव जयते

सं. म.ले.(ले.व ह.)/हिं.क./2025-26/340 दिनांक:26.12.2025

सेवा में,
निदेशक
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
भुवनेश्वर

विषय: हिंदी गृह पत्रिका **"धर्मपद"** के **14वें अंक** की पावती प्रेषण के संबंध में।

महोदया/महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित होने वाली हिंदी गृह पत्रिका **"धर्मपद"** के **14वें अंक** की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में शामिल सभी रचनाएँ पठनीय एवं सराहनीय हैं। विशेष रूप से:- श्री विक्रांत आनंद का लेख - **'भारतीय संस्कृति'**, श्री मिन्टू हालदार का लेख - **'तृप्ति'**, सुश्री सौमि बिस्वास की कविता - **'तुम मेरी कविता हो'**, श्रीमती सुषमा चौबे की कविता - **'वक्त है देश के लिए कुछ करने का'** प्रशंसनीय हैं। कार्यालयीन गतिविधियों का छायाचित्र देख कर प्रसन्नता हुई।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

Digitally signed by
Uday Pratap Singh
Date: 02-01-2026
11:08:36

(उदय प्रताप सिंह)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

P.B. No. 5329/5369, PARK HOUSE ROAD, BENGALURU 560 001.
Tel: 080-22379335 Fax: 080-22264691
https://cag.gov.in/ae/karnataka/en

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी. ,
सेक्टर-17ई, चंडीगढ़ - 160017
OFFICE of THE ACCOUNTANT GENERAL (A & E) PUNJAB & U.T. ,
Sector-17E, CHANDIGARH – 160017
फोन (Phone): 0172 - 2702906, 2703117, 2709576,
ई-मेल (E-mail) - agaepunjab@cag.gov.in

सं.- रा.भा.अनु./पत्रिका समीक्षा/फा-10/2025-26/ दिनांक: 01/01/2026

सेवा में,
निदेशक,
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, पूर्व तट रेलवे,
उत्तर खंड (तीसरी मंजिल), रेल सदन, सामन्त विहार,
चंद्रशेखरपुर, भुवनेश्वर

विषय: हिंदी गृह पत्रिका 'धर्मपद' के 14वें अंक की पावती प्रेषित करने के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका **'धर्मपद'** के 14वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है।

पत्रिका में श्री चंदन कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी की रचना **'आरंभ या अंत?'**, श्रीमती पूजा कुमारी, पत्नी श्री चंदन कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी की रचना **'पहली यात्रा'**, तथा श्रीमती माधुरी हालदार पत्नी श्री मिन्टू, लेखापाल की रचना **'साथी'** विशेष रूप से प्रशंसनीय है। पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

यह पत्र उपमहालेखाकार (प्रशा.) महोदया के अनुमोदन से जारी है।

भवदीय

Digitally signed by
Rakesh Ranjan Mishra
Date: 01-01-2026
11:10:35

सहायक निदेशक (राजभाषा)

हिंदी पुस्तक प्रदर्शनी

हिंदी कार्यशाला

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, भुवनेश्वर
हिंदी कार्यशाला

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
पूर्व तट रेलवे, भुवनेश्वर
हिंदी कार्यशाला

हिंदी पखवाड़ा पुरस्कार वितरण- 2025